रबड़ समाचार बुलेटिन

मई 2024 - मार्च 2025

सीमा के सिपाही के नाम !

मां का प्यार, बहिन की ममता,
शिशुओं का सुख छोड कर!
यौवन में यौवन के सपनों
से अपना मुख मोड कर!

आंधी-सा चल पड़ा हिमानी
घाटी में भूचाल-सा!
तन कर खड़ा राष्ट्र-रक्षा को
तू फौलादी ढाल सा!

ऊबड़-खाबड़ पंथ राह का
तू अनजाना आज है
लांघ रहा हिम-शिखर हाथ
में तेरे मां की लाज है!

सर पर कफन, कफन वाला सर
लिये हथेली पर अपने
नेफा की धरती पार करने
चला सत्य मां के सपने!

शोणित का अभिषेक आज
करने पर्वत कैलाश पर
प्रलयंकर को चला जगाने
मन के दृढ़ विश्वास पर!

बलि-पंथी! तू आज प्रलय के
पर्दे स्वयं हटाता चल!
हिमगिरि के प्राणों में सोया
ज्वालामुखी जगाता चल!

अगर विरह की आग भड़क कर
जले उसे जल, जाने दे।
अगर मिलन की बेलाएं भी
टलें आज, टल जाने दे।

आज गरजती तोपों से
करना तुझको आलिंगन है।
आगे बढ़कर महामृत्यु को
देना विष का चुंबन है।

आज मरण त्यौहार राष्ट्र ने
युग-युग बाद मनाया है।
आज जवानी को जौहर
दिखलाने का दिन आया है।

सुमनेश जोशी
चुने हुए राष्ट्रीयगीत से साभार

रबड़ बोर्ड

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
कोट्टयम - 686 002, केरल
पी बी नं.1122
दूरभाष : (0481) 2301231
ई मेल : ol@rubberboard.org.in
वेब साइट : www.rubberboard.org.in

रबड़ समाचार बुलेटिन

संयुक्तांकः मई 2024 - मार्च 2025
अंक 137

कार्यकारी निदेशक
एम वसंतगेशन आई आर एस

संपादक
एम श्रीविद्या
सहायक निदेशक (रा भा)

संपादन सहयोग
सिसिली पी एस
हिंदी सहायक

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से रबड़ बोर्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है। बिक्री के लिए नहीं केवल आंतरिक परिचालन के लिए।

जो समय बचाते हैं, वे धन बनाते हैं और बचाया हुआ धन, कमाए हुए धन के बराबर है
- महात्मा गांधी

मुख पृष्ठ :
प्लेटिनम जूबिली समारोह उद्‌घाटन

अंतिम पृष्ठ का चित्रकार -
नवनीत वी नायर,
सुपुत्र, श्रीमती रती देवी सी जी,
क. सहायक ग्रेड1

इस अंक में

रबड़ मूल्य श्रृंखला में शामिल लोगों को एक दूसरे का पूरक बनना चाहिए	4
प्लेटिनम जूबिली समारोह	5-6
रबड़ के संरक्षण के लिए सुरक्षा फसलें	7-8
रबड़ उत्पादन और उपभोग में वृद्धि	9
त्रिपुरा में आनुवंशिक रूप से संशोधित रबड़	10
प्रकृति की गोद में (कविता)	11
केंद्र वाणिज्य मंत्री के साथ विचार-विमर्श	12
मुख्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह	13
रबड़ बागानों के मानचित्रण के लिए ड्रॉन	14-16
रबड़ के साथ धान का अंतराफसलन	17-18
इनरोड परियोजनाः गतिविधियों का मूल्यांकन	19
मिज़ोरम टीम का दौरा	20
वाणिज्य विभाग का राजभाषा निरीक्षण	21
स्वच्छ भारत अभियान - परिणाम अपनी दृष्टि में	22-23
रबड़ शब्दावली	24
अनमिट यादें (कविता)	25
हिंदी पखवाडा समारोह	26
राजभाषा सम्मेलन	27
सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन	28-29
मुख्यालय में हिंदी कार्यशाला	30
अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी कार्यशाला	31-32
संयुक्त राजभाषा सम्मेलन	33
कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	34-36
कोट्टयम नराकास, राजभाषा ट्रॉफियों का वितरण	37
संयुक्त हिंदी सप्ताह / संयुक्त हिंदी कार्यशाला	38
संयुक्त हिंदी सप्ताह - समापन समारोह	39-40
केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद	41-42
सेवानिवृत्तियां	43
रसोई घर	46
हिंदी दिवस समारोह	47-50

रबड़ मूल्य श्रृंखला में शामिल लोगों को एक दूसरे का पूरक बनना चाहिए

प्राकृतिक रबड़ क्षेत्र में उत्पादकों से विनिर्माताओं तक फैली एक बड़ी मूल्य श्रृंखला है। इसमें छोटे और बड़े पैमाने के कृषक, बड़े बागान मालिकों, कृषकों, व्यापारियों, छोटे रबड़ उत्पादकों और टायर विनिर्माताओं का प्रतिनिधित्व है। हर किसी की ज़रूरतें अलग-अलग होती हैं, लेकिन सामान्य लक्ष्य अपने अद्वितीय क्षेत्रों में टिकाऊ बने रहना है।

कृषकों की प्रमुख मांगें बेहतर मूल्य प्राप्त करना, शुद्ध आय में वृद्धि, पारदर्शी विपणन सुविधाएं प्राप्त होना आदि हैं। हालाँकि, व्यापारियों और विनिर्माताओं के लिए गुणवत्तापूर्ण कच्चे माल की सटीक और निरंतर आपूर्ति होना महत्वपूर्ण है, चाहे वह लाटेक्स हो या शीट रबड़।

इस तरह यदि हर किसी की ज़रूरतों को पूरा करना है तो रबड़ मूल्य श्रृंखला में शामिल लोगों को एक-दूसरे को जानना होगा और प्रत्येक के सामने आने वाली चुनौतियों की पहचान करके ऐसे समाधान ढूंढना होगा जो आम तौर पर सभी के लिए स्वीकार्य हों। इस तरह का दृष्टिकोण प्राकृतिक रबड़ क्षेत्र के व्यापक विकास में मदद करेगा। कई क्षेत्रों में रबड़ क्षेत्र के लोग एक दूसरे के पूरक के रूप में काम कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, कृषकों के मामले में, रबड़ का कम उत्पादन और कम कीमतें मुख्य समस्याएँ हैं, लेकिन यदि उपज कम है तो भी उत्पाद उच्च गुणतायुक्त है तो बेहतर कीमत प्राप्त की जा सकती है और शुद्ध लाभ में सुधार किया जा सकता है। उसके लिए आवश्यक सामूहिक प्रसंस्करण केंद्र और बुनियादी ढांचे की स्थापना में विनिर्माता मदद कर सकते हैं। वर्तमान में उत्तर-पूर्वी राज्यों में रबड़ कृषि विकास के लिए टायर विनिर्माताओं के सहयोग से कार्यान्वित इनरॉड परियोजना रबड़ मूल्य श्रृंखला में आपसी सहायता का एक उदाहरण है। इससे कृषकों को रबड़ की खेती में मदद मिलेगी और विनिर्माताओं के लिए रबड़ की उपलब्धता सुनिश्चित होगी।

इसी तरह, अंतराफसलन और मधुमक्खी पालन भी कृषकों के लिए अतिरिक्त आय के स्रोत हैं। ऐसे उत्पादों से उद्योग चलाने वाले उद्यमी भी हैं। अंतराफसलन करने और मधुमक्खी कॉलनियां स्थापित करने के लिए उनके साथ आपसी प्रयासों में लग सकते हैं। उदाहरण के लिए, हल्दी, जिसमें उच्च स्तर का कुरकुमिन है, कुछ उद्योगों के लिए आवश्यक होती है। जिन लोगों को ऐसे कच्चे माल की जरूरत है, वे अंतराफसलन करने वाले रबड़ कृषकों के साथ आपसी समझौता कर सकते हैं, जिससे लंबे समय तक दोनों पक्षों के लिए फायदे मिलेंगे।

रबड़ से सीधे संबंध रखने वाली मूल्य श्रृंखलाएं भी अन्योन्याश्रित रूप से काम कर सकती हैं। रबड़ बोर्ड ऐसे प्रयासों में लगे लोगों के लिए एक साझा मंच प्रदान कर सकता है। याद रखें कि एक-दूसरे को फायदा देने वाले सामूहिक प्रयास आने वाले दिनों में फायदेमंद होंगे।

शुभकामनाओं के साथ,

एम वसंतगेशन आई आर एस
कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड

प्लेटिनम जूबिली समारोह और रबड़ कृषक सम्मेलन का समापन समारोह

प्लेटिनम जूबिली समारोह और रबड़ कृषक सम्मेलन का समापन समारोह 16 जनवरी 2025 को माम्मन माप्पिल्लै हॉल, कोट्टयम में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न विशिष्ट व्यक्तियों, हितधारकों और रबड़ कृषकों ने भाग लिया और रबड़ उद्योग से जुडे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की।

श्री एम वसंतगेशन आईआरएस कार्यकारी निदेशक रबड़ बोर्ड ने परिचयात्मक टिप्पणी दी और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से अप्रयुक्त क्षेत्रों को कम करने पर विचार प्रस्तुत किया। इसके बाद श्री मनोज वेंबु, निदेशक, ट्रस्टो 1 ने आईएसएनआर और ईयूडीआर (यूरोपीय संघ वनों की कटाई विनियमन) के कार्यान्वयन पर प्रकाश डाला।

डॉ. जॉबी जोसेफ, वैज्ञानिक भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान ने भारत में रबड़ की खेती के सामाजिक-आर्थिक योगदान पर विस्तार से चर्चा की।

समारोह की औपचारिक शुरुआत श्री एम वसंतगेशन आईआरएस के स्वागत भाषण के साथ हुई। उन्होंने रबड़ बोर्ड की 75 वर्षों की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इसके बाद भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय का विशेष संदेश पढा गया। श्री तिरुवंचूर राधाकृष्णन, विधायक (एम एल ए) कोट्टयम ने अध्यक्षीय भाषण किया और रबड़ कृषकों के योगदान की सराहना की। उन्होंने उद्योग को सशक्त बनाने के लिए नीति समर्थन पर बल दिया।

मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी और अल्पसंख्यक मामलों के राज्य मंत्री श्री जॉर्ज कुर्यन ने उद्घाटन भाषण किया और आईएस एनआर का औपचारिक शुभारंभ किया। उन्होंने

अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि रबड़ रोपण सहायिकी धीरे धीरे बढाई जाएगी। उन्होंने आगे बताया कि वे रबड़ क्षेत्र के व्यापक विकास के लिए कृषक सहित सभी के साथ चर्चा करने के लिए तैयार है। कृषकों को सुझाव देना हैं, जरूर उन पर विचार किया जाएगा।

समारोह के दौरान एम रूब बेस्ट परफॉर्मर अवार्ड्स वितरित किए गए। वर्ष 2023-24 की अवधि के दौरान रबड़ बोर्ड के एम रूब ऑनलाइन प्लैटफॉर्म के माध्यम से सबसे अधिक रबड़ का व्यापार करने वालों को पुरस्कार वितरित किए गए। बाल कृष्ण इंडस्ट्रीज लिमिटेड (टायर क्षेत्र), रूबफिला इंटरनेशनल लिमिटेड (गैर-टायर क्षेत्र), मणिमलयार रबेर्स प्राइवेट लिमिटेड (रबड़ व्यापारी क्षेत्र), लिस्सी रबेर्स प्राइवेट लिमिटेड (लाटेक्स प्रसंस्करण क्षेत्र), कवनार लाटेक्स लिमिटेड (रबड़ संसाधक क्षेत्र), जले बासा रबड़ उत्पादक संघ, उत्तर त्रिपुरा (पूर्वोत्तर क्षेत्र के रबड़ उत्पादक संघ), पुलियानम रबड़ उत्पादक संघ (पूर्वोत्तर क्षेत्र के रबड़ उत्पादक संघ को छोडकर), क्लासिक इंडस्ट्रीज एंड एक्सपोर्ट्स लिमिटेड (गैर-टायर क्षेत्र) आदि पुरस्कार विजेता हैं।

एम रूब लॉयल्टी पुरस्कार सीएनआर एसोसिएट्स और सोनिया रबेर्स ने जीता। एम रूब इनोवेशन पुरस्कार तुंचत्त एषुत्तच्चन रबेर्स प्राइवेट लिमिटेड और 'वेम्बनाड रबेर्स प्राइवेट लिमिटेड' को प्राप्त हुए।

रबड़ के संरक्षण के लिए सुरक्षा फसलें

शिवरामन पी आर
प्रभारी विकास अधिकारी

फसल लेने वाले पेड़ों की उत्पादकता में कमी का एक प्रमुख कारण पत्ते संबंधी रोग होते हैं। जलवायु परिवर्तन ने रबड़ क्षेत्र में भी कुछ संकट पैदा किये हैं। पिछले कुछ वर्षों में रबड़ के पेड़ों को अधिकाधिक प्रभावित करने वाली कुछ नई पर्ण बीमारियाँ पाई गई हैं। इसके अलावा, लंबे समय तक बरसात के मौसम के कारण बगीचे में कई बीमारियाँ पनपती हैं। आज रबड़ के पेड़ों में पत्ती रोग सबसे आम समस्या है। रबड़ पौधों में अपक्व काल बढने में ये रोग कारण बनते हैं।

रबड़ के बागानों में सुरक्षा फसलें लगाने से मिट्टी और नमी का संरक्षण हो सकता है और मिट्टी की संरचना और उर्वरता में सुधार हो सकता है। वे मिट्टी के एक अच्छे आवरण के रूप में कार्य करते हैं और उन्हें रबड़ के पौधे लगाने के साथ ही लगाया जाना चाहिए। वे बढ़ते हैं और मिट्टी को ढक देते हैं और बारिश की बूंदों को सीधे मिट्टी पर गिरने से रोकते हैं, जिससे भू-क्षरण कम हो जाता है। जब आवरण फसलों की पत्तियां और डंठल मिट्टी में विघटित हो जाते हैं, तो मिट्टी की उर्वरता बढ़ जाती है और उपजाऊपन बढ़ जाता है।

फलियां जैसे पौधे वातावरण से नाइट्रोजन का अवशोषण करते हैं और जड की गांठों में एकत्रित करके मिट्टी को देते हैं। मिट्टी पर एक सुरक्षित आवरण के रूप में उगने के कारण और बागानों में उगाना आसान होने के कारण फलियां जैसे पौधे रबड़ बागानों के लिए सबसे उपयुक्त हैं। हालाँकि प्युरेरिया, म्युकुना, कैलपेगोनियम और सेंट्रोसेमा आदि को सुरक्षा फसलों के रूप में उगाया जा सकता है लेकिन प्युरेरिया और म्युकुना का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है।

प्युरेरिया (प्युरेरिया फेज़िलोइड्स)

प्युरेरिया, भारतीय रबड़ बागानों में आम तौर पर उगाई जाने वाली सुरक्षा फसल है। इनमें असाधारण गर्मी सहनशीलता और खरपतवार दमनकारी गुण होते हैं। तने काटकर या बीज बोकर इन्हें उगाया जा सकता है। एक हेक्टेयर क्षेत्र में रोपण के लिए लगभग तीन से साढ़े चार किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। भले ही यह सूख जाता है, लेकिन बरसात के मौसम में यह फिर से उग आता है

और मिट्टी का आवरण बनकर रह जाता है। इसकी पत्तियाँ और तने पशुओं के चारे के रूप में उपयोग किए जाते है।

म्युकुना (म्युकुना बैक्टीटा)

भीषण गर्मी को भी झेलने में इनमें क्षमता है। त्रिपुरा में आम तौर पर पाई जाने वाली यह प्रजाति हमारे राष्ट्र में भी खूब उगती है। इनकी वृद्धि बहुत तेजी से होती है और अगर ध्यान न दिया जाए तो ये रबड़ के पौधों के आसपास फैलकर उन्हें नष्ट कर सकते हैं। अंकुरण आमतौर पर बीज बोने से होता है। एक बागान के लिए लगभग 200 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। मजबूत पौधों की लताओं से दो या तीन गाँठ वाले तनों को काटा जा सकता है और गमले में उगाया जा सकता है। गमले में मिट्टी के साथ 50 ग्राम सूखा पिसा हुआ गोबर मिला देना चाहिए। वे तेजी से बढ़ते हैं और खरपतवारों को दबाते हुए पूरे बगीचे का आवरण कर लेते हैं। सामान्य गर्मी में ये सूख नहीं जाते हैं।

चूँकि आवरण फसलों के बीज के खोल मोटे होते हैं, इसलिए रोपण से पहले बीजों को ध्यान देकर उपयुक्त बनाना चाहिए।

अम्ल उपचार

बीजों को सांद्रित सल्फ्यूरिक एसिड में भिगोने से खोल का गाढापन कम हो जाता है और अंकुरित होने वाले बीजों की संख्या बढ़ जाती है। बीजों को एक कांच के बर्तन में लें और उसमें गाढे सल्फ्यूरिक अम्ल डालें जब तक कि वे डूब जाएं। प्युरेरिया के बीजों को 10 मिनट तक और म्युकुना के बीजों को 30 मिनट तक अम्ल में भिगोकर बीच-बीच में हिलाते रहना चाहिए। रोपण से पहले, बीजों को पानी में अच्छी तरह धोना चाहिए ताकि बीज पर अम्ल बिलकुल न रहे।

गरम पानी से उपचार

यह विधि आमतौर पर प्युरेरिया के बीजों के लिए प्रयोग की जाती है। जितने भी आवश्यक हो उतने बीज एक कटोरे में लें और उसमें 60-80 डिग्री सेंटीग्रेड गर्म पानी डालकर बीज को चार से पांच घंटे तक भिगो दें।

रगड़ने की विधि

इस विधि का उपयोग म्युकुना बीजों के लिए किया जाता है जो अपेक्षाकृत मोटे होते हैं। एक तरीका यह है कि इसे एक या दो गुना अधिक रेत के साथ मिलाकर किसी तख्त या पीसने के पत्थर में डालकर इसे हल्के से पीस लें। दूसरा तरीका यह है कि इसे सैंड पेपर की परत वाले ड्रम में घुमाया जाए। बीजों को एक-एक करके निकालकर और उन्हें रेगमाल (सैंड पेपर) या खुरदरे सीमेंट के फर्श पर रगड़ने की भी रीति है। बीज वाले काले धब्बे के विपरीत भाग पर रगडना है, रगड़ने के बाद बोने से पहले रात भर सादे पानी में भिगो दें।

रोपण

रबड़ के पौधों की कतारों के बीच-बीच निराई-गुडाई करने के बाद उपचारित बीजों को समान मात्रा में रॉक फॉस्फेट के साथ रोपा जा सकता है। सुरक्षा फसलों के चारों ओर से छह महीने तक निराई-गुड़ाई की जानी चाहिए।

उर्वरक का प्रयोग

उर्वरक के रूप में रॉक फॉस्फेट या रॉक फॉस्फेट और म्यूरेट ऑफ पोटाश के मिश्रण का उपयोग करने से सुरक्षा फसल की जड़ें तेजी से बढ़ेंगी और नाइट्रोजन भंडारण क्षमता में वृद्धि होगी। एक हेक्टेयर सुरक्षा फसल के लिए दो बराबर खुराक में 165 किलोग्राम रॉक फॉस्फेट मिलाना पर्याप्त है। पहली खाद बुआई के एक महीने बाद दी जा सकती है। उसके बाद दो महीने बाद दूसरी बार खाद डाल सकते हैं। पोटैशियम की मात्रा कम वाली जगहों में 165 कि.ग्रा. रॉक फॉस्फेट के साथ 50 कि.ग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश भी सुरक्षा फसल लगाए गए बिस्तरों में फैलाना काफी होगा।

रबड़ उत्पादन और उपभोग में वृद्धि

राष्ट्र के प्राकृतिक रबड़ उत्पादन वर्ष 2023-24 में 2.1% बढकर 8,57,000 टन में पहूंच गया। वर्ष 2022-23 में उत्पादन 8,39,000 टन था। रबड़ के आंतरिक उपभोग में भी वृद्धि हुई है। पिछले वर्ष का उपभोग 14,16,000 टन था। वर्ष 2022-23 के दौरान देश में 13,50,000 टन रबड़ का उपभोग किया गया था। रबड़ के उपभोग में 4.9 प्रतिशत वृद्धि हुई है। वर्ष 2024-25 में रबड़ का उत्पादन 8,75,000 टन और उपभोग 14,25,000 टन होने की प्रत्याशा है। कोट्टयम में संपन्न बोर्ड की 187वीं बैठक में रबड़ बोर्ड ने आंकडे का प्रकाशन किया था। डॉ सावर धनानिया, अध्यक्ष, रबड़ बोर्ड ने बैठक की अध्यक्षता की। एम वसंतगेशन आई आर एस, कार्यकारी निदेशक ने आंकडे प्रस्तुत किए।

वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय द्वारा प्रकाशित आंकडे के अनुसार वर्ष 2023-24 के दौरान 4,92,682 टन रबड़ का आयात किया गया है। 4,199 टन रबड़ का निर्यात किया गया। 2024 मार्च के अंत तक कृषक, प्रसंस्करणकर्ता, व्यापारी, विनिर्माता आदि के पास 3,72,085 टन रबड़ के स्टॉक होने का अनुमान है। वर्ष 2023 में यह 4,42,602 टन था। पिछले वर्ष के दौरान 1,69,820 टन कॉंपाउंड रबड़ का आयात किया गया और 18,069 टन का निर्यात किया गया।

रबड़ बोर्ड और वाहन टायर विनिर्माण एसोसिएशन (आत्मा) सहित चार प्रमुख टायर कंपनियों ने उत्तर पूर्वी राज्यों में चलाने वाली योजना इनरोड के अनुसार 69,307 हेक्टेयर क्षेत्र में रबड़ का रोपण सफलतापूर्वक किया है। रबड़ उद्योग क्षेत्र का प्राकृतिक रबड़ क्षेत्र के प्रति वचनबद्धता के प्रमाण के रूप में, इस क्षेत्र की स्थिरता के लिए पाँच वर्ष के भीतर दो लाख हेक्टेयर प्रदेश में रबड़ बागान विकसित करने का लक्ष्य है। इसके लिए आत्मा ने 1000 करोड रुपए देने का प्रस्ताव दिया है।

के ए उण्णिकृष्णन (उपाध्यक्ष), एन हरि, प्रसेनजित बिश्वास आई एफ एस (सेवानिवृत्त), के विश्वनाथन, पी रवीन्द्रन, सी एस सोमन पिल्लै, कोरा सी जोर्ज, जी अनिलकुमार, कल्लोल डे, जी कृष्णकुमार, बिप्लब कुमार, एम पी राजीवन, केशव भट्ट मूलिया और डॉ सिजु टी (रबड़ उत्पादन आयुक्त) बैठक में उपस्थित थे। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के बागवानी आयुक्त बैठक में ऑनलाइन के माध्यम से भाग लिए। रबड़ बोर्ड के प्रभारी सचिव डॉ बिनोय के कुर्यन, प्रभारी निदेशक अनुसंधान डॉ एम डी जेस्सी, संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त एन सली और बोर्ड के अन्य पदधारी भी बैठक में भाग लिए।

त्रिपुरा में आनुवंशिक रूप से संशोधित रबड़ के पौधे लगाए गए

खेतों में पेडों की वृद्धि और अन्य गुणों का मूल्यांकन करने के लिए भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित आनुवंशिक रूप से संशोधित रबड़ के पौधे रबड़ बोर्ड के त्रिपुरा प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन में लगाए गए थे। रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम. वसंतगेशन आई.आर.एस. ने पौधा लगाकर उद्घाटन किया।

उच्च उत्पादकता, तेज वृद्धि, रोग प्रतिरोधक क्षमता और जलवायु परिवर्तन का सामना करने की क्षमता वाला रबड़ विकसित करना भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान का मुख्य उद्देश्यों में एक हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पारंपरिक प्रजनन विधियों के अलावा, आणविक तरीकों का भी तेजी से उपयोग किया जा रहा है।

जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान बढ़ रहा है, उन्हें सामना करने के लिए मजबूत जीन के साथ आनुवंशिक रूप से संशोधित रबड़ पौधों को विकसित करने का महत्व बढ़ रहा है। रबड़ बोर्ड भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों और अन्य गैर-पारंपरिक क्षेत्रों में रबड़ की खेती का विस्तार करने की कोशिश कर रहा है। अनुसंधान के इस क्षेत्र में परीक्षण अधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इन क्षेत्रों में उगाए गए पौधे, जो पारंपरिक रबड़ उत्पादक क्षेत्र नहीं हैं, उच्च गर्मी और ठंडे तापमान के अधीन हैं।

ऑस्मोटिन जीन के साथ आनुवंशिक रूप से संशोधित रबड़ के पौधे तैयार करने के प्रयास वर्ष 2006 में रबड़ अनुसंधान केंद्र में शुरू किए गए थे। गर्मी, ठंड, लवणता आदि और कई बीमारियों के प्रति प्रतिरोध करने की क्षमता पौधों को प्रदान करने की विशेषता इस जीन में है।

तम्बाकू, शहतूत, सोयाबीन और मिर्च जैसी अन्य फसलों में, ऑस्मोटिन जीन के संयोजन से ट्रांसजेनिक पौधे विकसित किए गए हैं। यह सिद्ध हो चुका है कि वे चरम मौसम की स्थिति का सामना कर सकते हैं। रबड़ अनुसंधान संस्थान की प्रयोगशाला में ऑस्मोटिन जीन का उपयोग करके आनुवंशिक संशोधन द्वारा विकसित रबड़ पौधों में प्रयोगशाला में नियंत्रित परिस्थितियों में ठंड और सूखेपन को झेलने की क्षमता भी देखी गई है। अब खेतों में इन पौधों की वृद्धि और अन्य गुणों का मूल्यांकन करने के प्रयास चल रहे हैं।

आनुवंशिक रूप से संशोधित पौधों के क्षेत्र परीक्षणों के लिए जेनेटिक मैनिपुलेशन (आरसीजीएम) की समीक्षा समिति और जेनेटिक इंजीनियरिंग मूल्यांकन समिति (जीईएसी) का अनुमोदन आवश्यक है। इसके अलावा, इन प्रयोगों के लिए संबंधित राज्य सरकारों से भी अनुमोदन की आवश्यकता होती है। त्रिपुरा

कविता

प्रकृति की गोद में

प्रकृति पसंद है मुझे बहुत
ये निस्वार्थ भाव तेरी
एहसास इसका मुझे अक्सर
मिलता है मेरी मां से

जब कभी मन उदास हो
निकलती हूं कुदरत को देखने
सुबह का सूर्योदय
फूलों की खूबसूरती
नदियों की आवाज़
पेडों की हरियाली
चिडियों के गाने

कितनी सुंदर है यह कुदरत
आओ सखी, मिट्टी में बैठो
प्रकृति की धडकन को महसूस करो
छोड दो अपने मोबाइल को
आओ बाहर खुले दरवाज़े से
अपना लो इस सुंदर प्रकृति को।

सिनी जे
कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
मुख्यालय

सरकार द्वारा इसकी अनुमति देने के कारण ही वहां इन पौधों का क्षेत्रीय परीक्षण शुरू किया है।

भारत, कृषि संबंधी महत्वपूर्ण जीनों का उपयोग करके आनुवंशिक रूप से संशोधित रबड़ विकसित करने वाला दुनिया का पहला देश है। भारत ने पहला आनुवंशिक रूप से संशोधित रबड़ विकसित किया जिसमें एमएनएसओडी जीन अत्यधिक अभिव्यक्त है। पौधों की वृद्धि और अन्य गुणों का मूल्यांकन करने के लिए प्रयोग गुवाहाटी, असम में किए जा रहे हैं। देश में वृक्ष फसलों के बीच रबड़ में पहली बार आनुवंशिक रूप से संशोधित पौधों का प्रक्षेत्र स्तर परीक्षण किया जा रहा है।

त्रिपुरा में अगर्तला के पास रबड़ बोर्ड के प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन में आयोजित पौधा लगाने के कार्यक्रम में, रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम वसंतगेसन आई आर एस के साथ रबड़ बोर्ड के सदस्य प्रसेनजीत बिश्वास, डॉ सिजु टी, रबड़ उत्पादन आयुक्त, डॉ. एम डी जेसी, प्रभारी निदेशक रबड़ अनुसंधान संस्थान, के षैलजा, संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त, रबड़ बोर्ड के वैज्ञानिक डॉ. के रेखा, डॉ. देबब्रत राय, भास्कर दत्ता और बोर्ड के अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

केंद्र वाणिज्य मंत्री का रबड़ क्षेत्र के हितधारकों के साथ विचार-विमर्श

श्री पीयूष गोयल, केंद्र वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने कोची में प्राकृतिक रबड़ क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा की।

प्राकृतिक रबड़ क्षेत्र की समस्याओं और संभावनाओं पर बैठक में चर्चा की गई। बैठक में घरेलू रबड़ उत्पादन में सुधार, मशीनीकरण में नवीन संभावनाओं का उपयोग, तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करके नए बाजार अवसरों की खोज पर चर्चा की गई।

बैठक में रबड़ कृषकों को कम ब्याज दरों पर बैंक ऋण उपलब्ध कराने, निर्यात जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए परीक्षण प्रयोगशालाओं की सुविधाएं बढ़ाने तथा विभिन्न प्रमाणन सुविधाएं स्थापित करने की संभावनाओं पर भी चर्चा की गई। केंद्र मंत्री ने रबड़ क्षेत्र के सतत विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए भारत के प्राकृतिक रबड़ क्षेत्र को समर्थन देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता से अवगत कराया।

केसांग यांगज़ोम शेरपा आईआरएस, संयुक्त सचिव, केंद्र वाणिज्य विभाग और एम. वसंतगेशन आई आर एस, कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड, मंत्री के साथ बैठक में उपस्थित थे। बैठक में प्राकृतिक रबड़ क्षेत्र के विभिन्न संगठनों, बड़े एवं छोटे कृषकों तथा रबड़ उद्योग के प्रतिनिधियों ने प्रतिभागिता कीं।

संतोष कुमार (हैरिसन मलयालम लिमिटेड) और संजीत आर नायर (यूनाइटेड प्लांटर्स एसोसिएशन ऑफ सथेर्न इंडिया) ने बड़े रबड़ कृषकों का और छोटे रबड़ कृषकों का प्रतिनिधित्व करके, स्मिजी के साजू कुर्याकोस और ए.आर. पाउलोस ने बैठक में भाग लेकर मंत्री के साथ बातचीत की।

विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों के रूप में बाबु जोसेफ (नेशनल कॉन्फेडरेशन ऑफ रबड़ प्रोड्यूसर्स सोसाइटीज), जॉर्ज वाली (इंडियन रबड़ डीलेर्स फेडरेशन), और सतीश एब्रहाम (एसोसिएशन ऑफ लेटेक्स प्रोसेसर्स ऑफ इंडिया); राजीव बुद्धराजा, डॉ. अश्रिता त्रिपाठी, जी. मुरली गोपाल (ऑटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चर्स एसोसिएशन); पी आर नाग (नैशनल फेडरेशन ऑफ रबर प्रोडक्ट्स एक्सपोर्टेर्स), रॉबिन बेबी (फेडरेशन ऑफ लेटेक्स प्रोसेसर्स) ने बैठक में प्रतिभागिता कीं।

अरीश नाग (फ्लोरेटेक्स रबर एंड प्लास्टिक प्राइवेट लिमिटेड); जेम्स तोमस, अखिल सण्णी (सेंट मैरीज़ रबर्स); अनिल कुमार पी सी (सेफ केयर रबर प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड), विनयराज (आर वन इंटरनेशनल लिमिटेड), डॉ. लॉरेंस हेरोल्ड (रबर मार्क) सहित अन्य प्रतिनिधि बैठक में शामिल थे। बैठक में रबड़ बोर्ड के विभिन्न विभागाध्यक्ष भी उपस्थित थे।

मुख्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह

राष्ट्र के **78वाँ स्वतंत्रता दिवस** समारोह गुरुवार 15 अगस्त 2024 को रबड़ बोर्ड मुख्यालय में आयोजित किया गया। एम वसंतगेशन आई आर एस, कार्यकारी निदेशक ने पूर्वाह्न 9.00 बजे रबड़ बोर्ड मुख्यालय में राष्ट्रीय झंडा फहराया। झंडा फहराने के समय सभी पदधारियों ने पूरे गर्व और सम्मान के साथ राष्ट्रीय गान गाया। कार्यकारी निदेशक ने झंडा फहराने के बाद स्वतंत्रता दिवस संदेश भी दिया।

समारोह में रबड़ बोर्ड के कई अधिकारियों ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ हिस्सा लिया।

समारोह के उपरांत, सभी उपस्थित लोगों के लिए उच्च स्तरीय नाश्ते का आयोजन किया गया।

रबड़ बागानों के मानचित्रण के लिए ड्रॉन

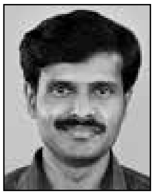

प्रदीप बी
वैज्ञानिक बी, भारतीय
रबड़ अनुसंधान संस्थान

कृषि में फसल प्रबंधन के लिए विश्व स्तर पर ड्रोन का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। छिड़काव ड्रोन का उपयोग मुख्य रूप से कीट नियंत्रण और उर्वरक अनुप्रयोग के लिए किया जाता है। हालाँकि, मैपिंग ड्रॉन का उपयोग कृषि फसलों के मानचित्रण और प्रबंधन, फसलों पर विभिन्न अध्ययन आदि के लिए किया जाता है। रबड़ की खेती से संबंधित अध्ययन के लिए भी ड्रॉन का उपयोग किया जा सकता है।

कृषि क्षेत्र में मैपिंग ड्रॉन के उपयोग पर नेदरलैंड के ट्विंटे विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केंद्र में भू-सूचना विज्ञान और पृथ्वी अवलोकन संकाय से प्राप्त व्यावहारिक प्रशिक्षण के आधार पर, इस लेख में रबड़ बागानों के मानचित्रण के लिए ड्रॉन का प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे किया जा सकता है, इसकी जानकारी दी गई है।

ड्रॉन तकनीक का उपयोग नए रोपित रबड़ बागानों की मैपिंग, रबड़ बागानों में पेड़ों की ऊंचाई का अनुमान, रबड़ के पेडों के कार्बन भंडारण का अध्ययन, रबड़ के पेड़ों की संख्या का अनुमान, रबड़ कृषि करने वाले क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन, पत्तियों के झड़ने और पत्तियों की बीमारियों की मैपिंग के लिए किया जा सकता है। रबड़ के बागानों में नीले, हरे, लाल, निकट अवरक्त विकरण (एनआईआर) और रेड एड्ज जैसे सेंसर वाले ड्रॉन का उपयोग मैपिंग आदि के लिए किया जाता है। भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान रबड़ बागानों के मानचित्रण के लिए ड्रॉन का उपयोग करने के प्रारंभिक चरण में है। इसके लिए प्रायोगिक अध्ययन आवश्यक है। इन अध्ययनों के आधार पर बागान मानचित्रण और संबंधित अध्ययनों के लिए ड्रोन का तेजी से उपयोग किया जा सकता है। उपरोक्त विषयों का अध्ययन करने की आवश्यकता और रबड़ की खेती में उनके लाभों का वर्णन नीचे किया गया है।

1. नवरोपित बागानों का मैपिंग (नए बागानों का मानचित्रण)

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान उपग्रह प्रौद्योगिकी का उपयोग करके भारत में रबड़ बागानों का मानचित्रण कर रहा है। हालाँकि,

ड्रॉन जैसी प्रौद्योगिकियाँ उपग्रह इमेजरी का उपयोग करके नव रोपित या पुनःरोपित रबड़ बागानों के मानचित्रण की व्यावहारिक बाधाओं को दूर कर सकती हैं। उपग्रह चित्रों और ड्रॉन के समन्वित अध्ययन तीन साल से कम बागानों के मानचित्रण के लिए उपयोगी होगा। इसके द्वारा नव रोपित बागान क्षेत्रों का मानचित्रण करके विशेष जानकारी एकत्र की जा सकती है। यह जानकारी रबड़ की खेती से संबंधित जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, सूखेपन, मिट्टी की उर्वरता आदि से संबंधित अध्ययनों के लिए उपयोगी होगी।

2. रबड़ के पेड़ों की ऊंचाई का अनुमान लगाना और कार्बन स्टॉक का अध्ययन करना

पेड़ों की ऊंचाई मापने के लिए ड्रॉन का उपयोग किया जाता है। इसके लिए डिजिटल मरीन मॉडल और डिजिटल सरफस मोडेल का उपयोग किया जाता है। अध्ययनों से संकेत मिलता है कि पेड़ों की ऊंचाई उनमें संग्रहीत कार्बन की मात्रा से संबंधित है। रबड़ के बागानों की ऊँचाई को मापकर उनमें संग्रहीत कार्बन की मात्रा का अनुमान लगाया जा सकता है। वैश्विक जलवायु परिवर्तन शमन उपायों में कार्बन स्टॉक एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है। ड्रॉन का उपयोग करके बागानों की भू-स्थानिक जानकारी वाले कार्बन स्टॉक का अध्ययन किया जा सकता है। इस तरह के अध्ययनों से समय और स्थान के साथ रबड़ की खेती के पैमाने और कार्बन पृथक्करण में बदलाव को समझने में मदद मिलेगी। भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान द्वारा अब तक किए गए अध्ययनों से संकेत मिलता है कि रबड़ के बागान एक अच्छा कार्बन सिंक हैं।

3. वृक्षों की गिनती और जलवायु परिवर्तन प्रभाव के मूल्यांकन के लिए

रबड़ के पेड़ों की गिनती के लिए ड्रॉन तकनीक का इस्तेमाल किया जा सकता है। केरल में कृषि क्षेत्र भी पिछले कुछ वर्षों में अत्यधिक वर्षा और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से प्रभावित हुआ है। रबड़ बोर्ड के आंकड़ों के मुताबिक, वर्ष 2017 में कन्याकुमारी जिले में आए ***ओखी*** चक्रवात ने तीन लाख से ज्यादा रबड़ के पेड़ नष्ट कर दिए थे। रबड़ के पेड़ों की संख्या का अनुमान लगाने से जलवायु प्रभावों से संबंधित अध्ययन में आसानी हो सकती है। बड़े रबड़ बागानों में, उस स्थान की सटीक पहचान करना उपयोगी होगा जहां रबड़ के पेड़ नष्ट हो गए हैं, और यह कृषक बीमा जैसे अध्ययन और परियोजनाओं के लिए उपयोगी होगा।

अधिकांश रबड़ बागान केरल के पश्चिमी घाट की तलहटी में स्थित हैं। पिछले कुछ वर्षों से कई जिलों में भूस्खलन का खतरा बना हुआ है। जलवायु परिवर्तन से प्रभावित क्षेत्रों का तेजी से मानचित्रण करने के लिए ड्रोन का उपयोग किया जा सकता है। वर्तमान

में, केरल में कुल रबड़ की खेती का लगभग 9.7 प्रतिशत भूस्खलन प्रवण क्षेत्रों में स्थित है। रबड़ बागानों में भूस्खलन के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए ड्रॉन प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, थोड़े ही समय में ड्रॉन का उपयोग करके मैपिंग के माध्यम से यह समझना संभव है कि मलप्पुरम जिले के कवळप्पारा में भूस्खलन के कारण रबड़ की कितनी खेती नष्ट हो गई है।

जलवायु परिवर्तन से प्रभावित स्थानों में ऊंचाई, ढलान आदि का सटीक ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी ड्रॉन उपयोगी होगा। केरल में रबड़ कृषि करने वाले क्षेत्रों में भूस्खलन-प्रवण क्षेत्रों पर भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान में वर्तमान में उपलब्ध डेटाबेस को बढ़ाने के लिए ड्रॉन-आधारित जानकारी का उपयोग किया जा सकता है। इससे रबड़ उत्पादक क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन करने और कृषकों को सटीक दिशानिर्देश प्रदान करने में मदद मिलेगी।

4. रबड़ बागानों में पत्ती झडन और पर्ण रोगों का मानचित्रण

रबड़ के पेड़ अक्सर पत्तों के झड़ने और पत्तियों की बीमारियों से प्रभावित होते हैं। इसके लिए जलवायु परिवर्तन एक प्रमुख कारक है। रोग मुख्य रूप से रबड़ की पत्तियों में क्लोरोफिल के स्तर को प्रभावित करते हैं और पत्तियों के रंग में भिन्नता दिखाते हैं। मैपिंग के लिए ड्रॉन में उपयोग किए जाने वाले नियर इंफ्रारेड विकिरण और रेड एड्ज जैसे सेंसर पत्तियों में क्लोरोफिल में बहुत सूक्ष्म परिवर्तनों को मैप करने के लिए उपयुक्त हैं। इससे रोगग्रस्त पत्तियों और पेड़ों की पहचान करने में मदद मिलेगी। ड्रॉन का उपयोग देवदार के जंगलों और कृषि फसलों में पर्ण रोगों का अध्ययन करने के लिए किया गया है। इसलिए, हॉट स्पॉट क्षेत्रों में ड्रॉन का उपयोग करके प्रायोगिक आधार पर मैपिंग की जा सकती है। इस तरह उन क्षेत्रों का मानचित्रण करना संभव है जहां पर्ण रोगों की सबसे अधिक घटनाएं होती हैं।

पर्ण रोगों और पत्तियों में क्लोरोफिल की वर्णक्रमीय विशेषताओं का अध्ययन करना उपयोगी होगा और इस प्रकार बगीचों में पत्ती रोगों की गंभीरता का एक मानचित्र तैयार किया जा सकता है। वर्तमान में, रबड़ में पर्ण रोगों के बारे में और भौगोलिक सूचनाओं के बारे में अधिक अध्ययन नहीं हुए हैं, इसलिए प्रायोगिक आधार पर अध्ययन करने के लिए ड्रॉन और भौगोलिक सूचना प्रणाली जैसी तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। इस प्रकार, केरल में रबड़ कृषि वाले पंचायतों को पत्तियों के झड़ने की गंभीरता, कीट रोगों आदि के आधार पर वर्गीकृत करना संभव है।

कृषि क्षेत्र के सतत विकास के लिए प्रौद्योगिकी अपरिहार्य है। विश्व स्तर पर, कृषि में ड्रॉन जैसी आधुनिक प्रणालियों का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। ट्विंटे विश्वविद्यालय के ड्रॉन प्रयोगशाला में जहां लेखक को प्रशिक्षित किया गया था, चित्रों में दिखाए गए हैं, साथ ही ड्रॉन का उपयोग करके वनस्पति और पेड़ों की मैपिंग और डेटा संग्रह भी दिखाया गया है। इसका व्यावहारिक उपयोग प्रयोगात्मक आधार पर रबड़ की खेती के क्षेत्र में भी किया जा सकता है।

रबड़ के साथ धान का अंतराफसलन

रबड़ के नवरोपण करने वाली जगहों में आमतौर पर सब्जियाँ, केला, अनन्नास आदि की खेती अंतराफसलन के रूप में की जाती है। चावल की खेती अंतराफसलन के रूप में करने वाले कृषक बहुत कम हैं। इस लेख में, त्रिपुरा के एक किसान रबड़ के बागान के बीच एक सुगंधित और गुणतायुक्त चावल की खेती करके सफलतापूर्वक आय लेने के बारे में बताया है।

नूरजहां पी के
प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त

मोनिका कुंडु
क्षेत्रीय अधिकारी

रबड़ के पौधों की परिपक्वता अवधि लगभग सात वर्ष है। इस अवधि के दौरान, जब रबड़ से कोई आय प्राप्त नहीं होती है, किसानों के लिए रबड़ पौधों के बीच कुछ अंतराफसल उगाना बहुत फायदेमंद होगा। इस दौरान अगर खेती से कोई आमदनी नहीं मिलती है तो कृषकों को आजीविका के रूप में दूसरे मार्गों को तलाशने पडते है। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में रबड़ कृषि के विकास के लिए कार्यान्वित 'इनरोड' परियोजना में किसानों को शामिल करते समय सामना करने वाली मुख्य चुनौतियों में से एक है यह। त्रिपुरा में अंतराफसलन के रूप में अनन्नास की खेती नाममात्र रूप में की जाती है, लेकिन बहुत व्यापक रूप से नहीं। वहां अधिकतर सब्जियों की खेती अंतराफसलन के रूप में की जाती है।

इस वर्ष के रोपण के बाद, निरीक्षण के लिए बागानों का दौरा करते समय, यह देखा गया कि चावल को रबड़ के पेड़ों के बीच एक अंतराफसलन के रूप में उगाया गया है। जब हवा में धान से आती हुई एक विशेष सुगंध महसूस हुई तो, यह जानने को उत्सुक हो गया कि किस किस्म के धान की खेती हुई है। राधा मोहनपुर रबड़ उत्पादक संघ के अध्यक्ष और अगर्तला में 'इनरोड' परियोजना के सफल आयोजक सुखदेव से प्राप्त ज्ञान आश्चर्यजनक था। त्रिपुरा की एक अनूठी चावल किस्म, कालीखासा (सुगंधित चावल), की खेती अंतरफसल के रूप में की थी। यह एक ऐसी किस्म है, जिसमें रोग और कीट का प्रकोप बहुत कम होता है। राबालक्ष्मी देबबर्मा, जिन्होंने इसकी खेती की है, उनकी राय में रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल से इस प्रकार के चावल की खुशबू पर असर पड़ेगा। इसलिए वे केवल जैविक खाद का ही इस्तेमाल करते हैं।

रबड़ के बीच पर्याप्त अंतर में धान पौधे खड़े हैं। सबसे ज्यादा खर्च निराई और कटाई पर होता है। एक हेक्टेयर प्रदेश में खेती के लिए लगभग 20 से 22 किलोग्राम बीज का उपयोग किया है। एक हेक्टेयर से लगभग 30 से 40 क्विंटल चावल प्राप्त होता है। फसलन के दौरान लगभग 18 से 24 क्विंटल चावल प्राप्त होता है। धान के वजन का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा चावल के रूप में प्राप्त होता है। 2022 में कालीखासा किस्म के चावल के लिए प्राप्त अनुमानित कीमत 95 रुपए प्रति किलोग्राम थी। एक हेक्टेयर अंतराफसलन से किसान को एक लाख रुपये का निवल लाभ प्राप्त होने की सूचना मिली।

अप्रैल - मई में बीज बोकर पूजा (नवरात्री) के पहले काटी जाने वाली खारिफ कृषि प्रणाली यहां अपनाई जाती है। चूंकि सितंबर महीने में रबड़ के पौधे रोपने से पहले धान की खेती की जाती है, इसलिए रबड़ के पौधों के साथ विकास के दौरान बहुत कम प्रतिस्पर्धा होती है। इससे कृषकों को रबड़ के पौधे रोपने के बाद निराई-गुडाई पर खर्च होने वाली रकम की भी काफी बचत होती है। ऐसे बागानों में जहां कोई अंतरफसलन नहीं होती हैं, निराई-गुडाई में थोड़ी सी भी देरी रबड़ की पौध की वृद्धि को प्रभावित कर सकती है। जिन बागानों में चावल की अंतराफसलन होती है, वहां खरपतवार कम होने के कारण रबड़ के पौधे अच्छी तरह बडे हो जाते हैं।

चूंकि यह त्रिपुरा की अनूठी खाद्य फसल होने की वजह से और इस किस्म का उपयोग ज्यादातर पूजा और आतिथ्य के लिए किए जाने की वजह से, धान की खेती के लिए 'राष्ट्रीय कृषि विकास योजना' के तहत बीज, जैविक उर्वरक और जैव-कीटनाशकों की खरीद के लिए सरकार से 9000 रुपए प्रति हेक्टेयर प्राप्त हो रहे हैं। वर्ष 2022 के दौरान राज्य कृषि विभाग से यह भी पता चला कि इस प्रकार के चावल का निर्यात भी नाममात्र रूप में किया गया था। चूंकि इसमें अन्य चावलों की तुलना में अधिक फाइबर, प्रोटीन और फ्लावनोइड होते हैं इसलिए इसका उपयोग स्वास्थ्य देखभाल उद्देश्यों के लिए अधिक किया जाता है। त्रिपुरा में वर्तमान में खेती की जाने वाली चावल की नौ किस्मों में से कालीखासा एकमात्र सुगंधित किस्म है। धान की बोरोक और बिन्नीच्चाल किस्मों की खेती भी अनुसूचित जनजाति क्षेत्र में की जाती है। बिन्नीच्चाल चावल की स्थानीय कीमत 80 से 90 रुपए प्रति किलोग्राम थी। पिछले सीज़न में अंतराफसलन किए बोरोक किस्म के चावल के लिए स्थानीय कीमत 40 रुपए/कि ग्रा, अदुमा किस्म के लिए 70-80 रुपए/कि ग्रा, गारो मालती किस्म के लिए 70 रुपए/कि ग्राम और गारो किस्म के लिए 65 रुपए/कि ग्रा था। हालाँकि, अन्य किस्मों की तुलना में कालीखासा चावल की कीमत बेहतर है। पिछले साल इसकी कीमत 95-100 रुपए/ किलोग्राम थी। बिन्नीच्चाल किस्म को 'चिपचिपे चावल' के नाम से जाना जाता है क्योंकि यह अन्य किस्मों की तुलना में अधिक चिपचिपा होता है।

चावल की खेती के लिए खेती की प्राचीन 'झूमिंग' पद्धति का उपयोग किया जाता है, इसलिए मिट्टी की अधिक जुताई किए बिना खेती की जाती है। अधिक झुकाव वाले स्थानों में सपाट भूमि बनाने के बाद खेती की जाती है इसलिए मिट्टी के बहाव में नियंत्रण संभव हो सकता है। रबड़ बोर्ड उन जगहों पर अंतराफसलन की सिफारिश नहीं करता है जहां मिट्टी की अधिक जुताई आवश्यक होती है। लेकिन, कम ढलान वाले क्षेत्रों में रबड़ के पौधों को नुकसान पहुंचाए बिना धान का अंतराफसलन पहले तीन वर्षों के लिए किया जा सकता है। इस प्रकार त्रिपुरा के धान की खेती ज़रूर अनूठी है।

इनरोड परियोजनाः गतिविधियों का मूल्यांकन

डॉ. टी सिजु, रबड़ उत्पादन आयुक्त ने 'इनरोड' परियोजना की प्रगति की समीक्षा की, जिसे रबड़ बोर्ड द्वारा ऑटोमोटिव टायर मैनुफैक्चेर्स एसोसिएशन (आत्मा) के सहयोग से वर्ष 2021 से 2026 तक पांच वर्षों की अवधि में उत्तर पूर्वी राज्यों में रबड़ की खेती को दो लाख हेक्टेयर तक विस्तारित करने के लिए कार्यान्वित किया जा रहा है।

पहले तीन वर्षों में खेती का विस्तार लगभग 70,000 हेक्टेयर तक किया गया। चौथे वर्ष में खेती को 65,500 हेक्टेयर तक विस्तारित करने की तैयारी चल रही है। अब तक चौथे वर्ष की खेती के लिए उपयुक्त 33,000 हेक्टेयर भूमि की पहचान की जा चुकी है और खेती की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। रबड़ उत्पादन आयुक्त ने 'इनरोड' परियोजना की गतिविधियों का उचित मूल्यांकन करने के लिए उत्तर पूर्वी क्षेत्र के गुवाहाटी क्षेत्र में विभिन्न रबड़ पौधशालाओं का दौरा किया। उन्होंने योजना के तहत वितरित पौधों की वृद्धि और गुणवत्ता का आकलन किया और फिर गतिविधियों की समीक्षा करने तथा अधिकारियों के साथ बातचीत करने के लिए रबड़ बोर्ड के अगिया प्रादेशिक कार्यालय का दौरा किया।

गुवाहाटी क्षेत्र के प्रादेशिक कार्यालयों के प्रमुखों के साथ क्षेत्रीय बैठक में डॉ. टी सिजु ने 'इनरोड' परियोजना के चौथे वर्ष की अब तक की गतिविधियों का मूल्यांकन किया और आवश्यक सुझाव दिए। उन्होंने कार्यालय प्रमुखों के साथ बातचीत की और रबड़ बोर्ड की सेवाओं और भविष्य की गतिविधियों के बारे में विस्तार से बात की।

श्री सक्कीर वी ए, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने 'इनरोड' परियोजना की गतिविधियों की समीक्षा की और परियोजना के कार्यान्वयन में रबड़ बोर्ड के पदधारियों के अथक प्रयासों और *आत्मा* के सहयोग की प्रशंसा की। रश्मी रेखा मजुमदार, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने परियोजना की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया।

'इनरोड' परियोजना के तहत रबड़ की खेती का विकास, उत्तर पूर्वी राज्यों के लोगों की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति में महत्वपूर्ण बदलाव का कारण बनेगा।

*(तैयार किया - **श्री सक्कीर वी ए**, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त)*

मिज़ोरम टीम ने रबड़ बोर्ड का दौरा किया

मिज़ोरम राज्य में रबड़ की खेती के विस्तार, रबड़ उत्पादक संघों और समूह लाटेक्स प्रसंस्करण केंद्रों के गठन के हिस्से के रूप में मिज़ोरम के मुख्यमंत्री के निर्देशों के अनुसार गठित रबड़ मिशन टीम ने रबड़ बोर्ड के मुख्य कार्यालय, अनुसंधान संस्थान, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में दौरा करके बातचीत की।

रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम वसंतगेशन आईआरएस, रबड़ उत्पादन आयुक्त डॉ. टी सिजु, संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त एन. सली के साथ चर्चा की और मिजोरम राज्य में लाटेक्स प्रसंस्करण, कृषि मशीनीकरण आदि के कार्यान्वयन के लिए केंद्र द्वारा विकसित योजनाएं और महात्मा गांधी ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना की संभावनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। उत्तर पूर्वी राज्यों में रबड़ बोर्ड और ऑटोमोटिव टायर मन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन द्वारा संयुक्त रूप से कार्यान्वित इनरोड

(इंडियन नैचुरल रबर ऑपरेशन फॉर असिस्टेड डेवलपमेंट) परियोजना के तहत मिजोरम राज्य में रबड़ की खेती के लिए उपयुक्त स्थानों पर खेती के विस्तार पर भी टीम ने विस्तार से चर्चा की।

रबड़ मिशन टीम ने कांजिरप्पल्ली प्रादेशिक कार्यालय के अधीन कुरुंकण्णी रबड़ उत्पादक संघ का दौरा किया और लाटेक्स प्रसंस्करण के विभिन्न चरणों और संघ की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जाना। मिज़ोरम भूमि संसाधन, मृदा और जल संरक्षण के संयुक्त निदेशक रोज़ी लालमुआन सांगी हमर, अवर सचिव एच मलस्वमी, विशेष कार्य अधिकारी (रबड़) सी रिनज़ानपुया, मृदा संरक्षण रेंजर लालथफामकिमा आदि की टीम ने दो दिवसीय दौरे किए।

*(तैयार किया - **डॉ विन्सेन्ट के ए**, विकास अधिकारी)*

रबड़ बोर्ड मुख्यालय और भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान में वाणिज्य विभाग का राजभाषा निरीक्षण

वाणिज्य विभाग से श्री पी.के. वर्मा, उप महानिदेशक, के नेतृत्व में श्री संजय पाटिल, संयुक्त निदेशक (रा भा) और श्री शुभम रामावत, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी के साथ तीन सदस्यीय टीम ने 05.11.2024 को रबड़ बोर्ड मुख्यालय और भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान (आरआरआईआई) में राजभाषा निरीक्षण किया। निरीक्षण का उद्देश्य रबड़ बोर्ड में हिंदी में पत्राचार, फाइलों में टिप्पणी और अन्य प्रशासनिक गतिविधियों में राजभाषा के कार्यान्वयन और अनुपालन का मूल्यांकन करना था।

निरीक्षण दल ने रबड़ बोर्ड और भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान परिसर के विभिन्न विभागों, प्रभागों और अनुभागों की समीक्षा की। टीम ने अपने दौरे के दौरान बोर्ड में राजभाषा का कार्यान्वयन, पत्राचार और फाइल नोटिंग्स में हिंदी के उपयोग और वार्षिक रिपोर्टों तथा अन्य दस्तावेज़ों की गुणवत्ता आदि का मूल्यांकन किया। टीम ने पाया कि रबड़ बोर्ड के कई विभागों और प्रभागों ने राजभाषा नीति के अनुपालन को सुनिश्चित करते हुए अपने अधिकाधिक पत्राचार में हिंदी का उपयोग किया है।

टीम ने रबड़ बोर्ड द्वारा तैयार की गई वार्षिक रिपोर्ट और अन्य दस्तावेज़ों की जाँच की। वे हिंदी में प्रस्तुत सामग्री की गुणवत्ता की सराहना की। हिंदी के प्रभावी प्रयोग के लिए बोर्ड द्वारा किए गए प्रयासों पर टीम संतुष्टि प्रकट की।

स्वच्छ भारत अभियान - परिणाम अपनी दृष्टि में

पुष्पकुमारी आर
लेखा अधिकारी

घर, समाज और देश में स्वच्छता को जीवनशैली का अंग बनाने के लिए सार्वभौमिक साफ सफाई का यह स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत केंद्रीय सरकार द्वारा दो अक्टूबर 2014 को महात्मागाँधी की 145वीं जयंति के अवसर पर की गई थी। स्वच्छता का आशय कीटाणु, कचरा, गंदगी आदि से मुक्त करने की स्थिति है। साफ सफाई की बुनियादी सुविधा से वंचित खुले में शौच करने वाले विश्व के 70 प्रतिशत लोग भारत में ही है। इस अस्वच्छता के कारण अन्य बीमारियों के साथ पाँच वर्ष के कम बच्चों की मौतें भी होती हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकडों के अनुसार गाँवों और शहरों में उत्पादित एक-तिहाई कचरा सडकों पर ही सडता है। देश के प्रमुख नगरों में (चेन्नई, कोलकत्ता, मुंबई और दिल्ली) हर दिन 16 बिलियन लीटर गंदा पानी पैदा होता है।

स्वच्छ भारत अभियान का प्रथम उद्देश्य भारत के कोने-कोने को साफ सुथरा रखना है। खुले में शौच की समस्या को समाप्त करना, अर्थात् संपूर्ण देश को खुले में शौच करने से मुक्त (ओडीएफ) घोषित करना आदि स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य है। शौचालय का निर्माण, जल की आपूर्ति, ठोस व तरल कचरे का उचित तरीके से प्रबंधन करना और सडकों और फुटपातों को साफ रखना आदि भी स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य में शामिल हैं।

इस अभियान में दो उप अभियान सम्मिलित है :-

i) स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) तथा

ii) स्वच्छ भारत अभियान (शहरी)

इसमें जहाँ ग्रामीण इलाकों के लिए पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय और शहरों में स्वच्छता अभियान की पूर्णता के लिए शहरी विकास मंत्रालय जिम्मेदार है। अभियान को दो भागों को बाँटकर देखने का मुख्य कारण यह है कि गाँवों और शहरों की आवश्यकता विभिन्न है।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान

ग्रामीण इलाकों के प्रत्येक घर में शौचालय बनवाने के लिए प्रत्येक घर पर 12000 रुपए आबंटित किये गये थे। ग्रामीण इलाकों के ये कार्य करने का प्रबंध किया गया है :-

- खुला शौच मुक्त करना
- गंदा पानी के निकास के लिए नालियाँ बनवाना
- सार्वजनिक स्थलों पर कचरा पात्र का निर्माण करवाना
- ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत भारत के शहरों को साफ रखने के लिए एक अलग से रणनीति बनाई गई है।

- शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन सहित लगभग सभी 1.04 करोड घरों को शौचालय, 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय, 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय उपलब्ध कराना है
- शहरों के प्रमुख स्थान जैसे सार्वजनिक अस्पताल, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन आदि स्थलों पर शौचालय बनाना
- फैक्टरियों के अपशिष्ट कूडे-कचडे पर

नियंत्रण के उपाय करना

- लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाना

स्वच्छ भारत अभियान मेरी राय में सफल सिद्ध हुआ है

- स्वच्छ शहरः- स्वच्छ भारत पहल के तहत दरवाज़े से दरवाज़े तक कचरा संग्रह और निपटान गतिविधियों की शुरूआत की गयी। इसे कूटा निस्तारण की समस्या का समाधान करने में मदद मिली। 2021 अक्तूबर में युवा मामले और खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित महीने भर चलनेवाले स्वच्छ भारत ड्राइव का उद्देश्य 75 लाख किलोग्राम प्लास्टिक और कचरा इकट्ठा करना था। लेकिन अभियान के पहले 10 दिनों में पूरे देश में 30 लाख किलोग्राम से अधिक प्लास्टिक और कचरा एकत्र किया गया था। स्वच्छ भारत पोर्टल के अनुसार अभियान का प्रभाव कई गुना रहा है– सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय।
- खुले में शौच से मुक्तः- स्वच्छ भारत मिशन के तहत देश के सभी गाँवों ने 2 अक्तूबर 2019 तक खुले में शौच से मुक्त (ओ डी एफ) घोषित कर दिया है। इसके लिए ग्रामीण भारत में 100 मिलियन से अधिक शौचालय का निर्माण किया गया। सभी शहरी स्थानीय निकायों को भी खुले में शौच मुक्त घोषित कर दिया गया है और 70 प्रतिशत ठोस कचरे अब वैज्ञानिक रूप से संसाधित किया है।
- हर घर शौचालयः- स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) के तहत दो अक्तूबर 2014 से 31 दिसंबर 2019 तक 10.24 करोड व्यक्तिगत घरेलु शौचालयों का निर्माण किया गया था। सरकार ने 2020-21 से 2024 तक की अवधि के लिए स्वच्छ भारत अभियान के चरण II की मंजूरी दी है।
- सामाजिक उत्थानः- स्वच्छ और स्वच्छ परिवेश के अलावा मिशन ने इस प्रक्रियाओं में शामिल लोगों को सम्मान भी दिया है। ओडीषा के पारदीप में ड्रांसजेंडर और कूडा बीननेवाले सक्रिय रूप से अपशिष्ट प्रणाली में शामिल रहे हैं। यह भी गणना की गई थी कि स्वच्छ भारत अभियान द्वारा 7.5 मिलियन पूर्णकालिक नौकरियों के बराबर सृजित किया गया था।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय अभियान 25 सितंबर 2014 से 31 अक्तूबर 2014 के बीच केंद्रीय विद्यालयों और नवोदय विद्यालयों में आयोजित किया गया था जिससे विद्यार्थियों को देश को स्वच्छ रखने की आवश्यकता पर जागरूक किया गया।
- कई कम विकसित देश सुरक्षित स्वच्छता तक सार्वभौमिक पहूँच प्रदान करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, लेकिन पिछले 8 वर्षों में भारत खुले में शौच को खत्म करने के अपने लक्ष्य तक पहूँच गया है। स्वच्छ भारत अभियान एक चक्र की तरह है, जो हर टुकडे को जोडता है और इसका प्रभाव नदियों, घरों, पर्यावरण और लोगों के जीवन पर देखा जा सकता है।

रबड़ शब्दावली

1. **POWDERY MILDEW :** A fungal disease caused by Oidium heveae, resulting in a white powdery growth on the leaves and affecting photosynthesis and latex production.

   चूर्णिल आसिता: ओडियम हीवी के कारण होने वाला एक कवक रोग, जिसके परिणामस्वरूप पत्तियों पर सफेद पाउडर की वृद्धि होती है और प्रकाश संश्लेषण और लाटेक्स उत्पादन प्रभावित होता है।

2. **BROWN ROOT DISEASE (BRD):** A soil-borne fungal disease caused by the pathogen Phytophthora spp., which affects the roots, leading to wilting and decline of the rubber tree.

   ब्राउन रूट रोग (बीआरडी): रोगजनक फाइटोफ्थोरा प्रजाति के कारण होने वाला एक मिट्टी-जनित कवक रोग, जो जड़ों को प्रभावित करता है, जिससे रबड़ का पेड़ मुरझा जाता है और नष्ट हो जाता है।

3. **WHITE ROOT DISEASE (WRR):** Another soil-borne disease caused by the fungus Rigidoporus lignosus, resulting in root rot and a decline in rubber tree health.

   श्वेत जड़ रोग (डब्ल्यूआरआर): रिगिडोपोरस लिग्नोसस कवक के कारण होने वाली एक और मिट्टी-जनित बीमारी, जिसके परिणामस्वरूप जड़ सड़ जाती है और रबड़ के पेड़ के स्वास्थ्य में गिरावट आती है।

4. **COLLETOTRICHUM LEAF DISEASE (CLD):** A disease caused by Colletotrichum gloeosporioides, leading to leaf spot symptoms and defoliation.

   कोलेटोट्राइकम पत्ती रोग (सीएलडी): कोलेटोट्राइकम ग्लियोस्पोरियोइड्स के कारण होने वाला रोग, जिससे पर्ण चित्ती के लक्षण दिखाई देते हैं और पत्तियां गिर जाती हैं।

5. **RUBBER WILT DISEASE:** A vascular wilt disease caused by the soil-borne pathogen Phytophthora spp., leading to wilting, leaf drop, and eventual death of the rubber tree.

   रबड़ विल्ट रोग: मृदा जनित रोगजनक फाइटोफ्थोरा प्रजाति के कारण होने वाला एक संवहनी विल्ट रोग, जिससे रबड़ के पेड़ का मुरझाना, पत्तियां गिरना और अंततः पेड का नाश हो जाता है।

6. **LEAF SPOT DISEASES:** Various fungal and bacterial pathogens can cause leaf spot diseases, affecting the appearance and health of rubber tree leaves.

   पर्ण चित्ती रोग: विभिन्न कवक और जीवाणु रोगजनक पर्ण चित्ती रोग पैदा कर सकते हैं, जो रबड़ के पेड़ की पत्तियों की उपस्थिति और स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

7. **SHOOT ROT:** The tender green shoots rot. More damaging for nursery seedlings and the young plants in the field.

   अंकुर सड़न (शूट रोट): कोमल हरे अंकुर सड़ जाते हैं। पौधशाला की पौध और खेत में छोटे पौधों के लिए अधिक हानिकारक।

8. **BIRD'S EYE SPOT:** Symptoms appear as small necrotic spots with dark/brown margins and pale centre. Severe infection leads to premature defoliation and die back.

बर्ड्स आई स्पॉट: गहरे/भूरे किनारों और हल्के केंद्र के साथ छोटे परिगलित धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं। गंभीर संक्रमण से, समय से पहले पत्ते झड़ जाते हैं और सूख जाते हैं।

9. **PATCH CANKER OR BARK CANKER:** On the tapping panel region, or anywhere on the stem including the collar oozing out. This may not be evident in all cases. In most cases oozing of latex is observed. The bark rots, and a coagulated rubber pad, emanating a foul smell is seen in between the wood and the rotting bark. When this is removed slight discolouration of the wood in this region is also noticed.

पैच कैंकर या झाल कैंकर : टापिंग पैनल क्षेत्र पर, या कॉलर सहित तने पर कहीं भी बाहर निकल रहा है। यह सभी मामलों में स्पष्ट नहीं हो सकता है। अधिकांश मामलों में लाटेक्स का रिसाव देखा जाता है। छाल सड़ जाती है और लकड़ी तथा सड़ती छाल के बीच में एक जमा हुआ रबड पैड दिखाई देता है, जिससे दुर्गंध आती है। जब इसे हटा दिया जाता है तो इस क्षेत्र में लकड़ी का हल्का सा रंग खराब हो जाता है।

कविता

अनमिट यादें

इतनी गहरी है चाहत तेरी,
हर पल है तन्हा, बिन याद तेरी।
ये वीरानियाँ, ओ प्रिया,
सिर्फ तेरा ही नाम दोहराती।

"घुल गया था, तुझमें ही जीवन सारा,
छोड गया तू, देकर दुःख का किनारा।
तपती है अब, विरह की ये ज्वाला,
यादों की लहरें, देती हैं हवाला।"

अभिलाष टी
कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
प्रादेशिक कार्यालय,
तलिपरंबा

हिंदी पखवाडा समारोह
- 2024 -

संघ की राजभाषा नीति अमल में लाने के लक्ष्य से रबड़ बोर्ड में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसी सिलसिले में हर वर्ष बोर्ड के मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान एवं राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में हिंदी पखवाडा समारोह का तथा बोर्ड के अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2024 के दौरान भी बोर्ड के कार्यालयों में हिंदी पखवाडा समारोह एवं हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

वर्ष के दौरान हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का सम्मिलित आयोजन 14-15 सितंबर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में संपन्न हुआ था।

रबड़ बोर्ड में पखवाडे के दौरान मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक प्रतिभागियों को शामिल कराने का प्रयास किया गया। इस वर्ष की प्रतियोगिताओं में मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान से करीब 300 पदधारी भाग लिये। प्रतियोगिताओं के निर्णायक के रूप में बोर्ड से बाहर के हिंदी से जुडे विशेषज्ञ व्यक्तियों को आमंत्रित किया।

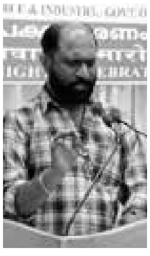

राजभाषा सम्मेलन

राजभाषा सम्मेलन 2024 का आयोजन रबड़ बोर्ड मुख्यालय में दिनांक 03.10.2024 को बडे धूमधाम से किया गया। मलयालम के विख्यात साहित्यकार श्री पी आई शंकरनारायणन सम्मेलन में मुख्य अतिथि थे। एम वसंतगेशन, आई आर एस, कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती निषिता पी की प्रार्थना से हुई। डॉ. बिनोई के कुर्यन ने स्वागत भाषण किया और सभी विशिष्ट व्यक्तियों और प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं। इसके बाद कार्यकारी निदेशक श्री एम वसंतगेशन आईआरएस ने अध्यक्षीय भाषण किया। जिसमें इस अवसर के महत्व पर प्रकाश डाला गया और विजेताओं की प्रशंसा की।

उद्‌घाटन भाषण प्रसिद्ध मलयालम लेखक श्री पी आई शंकरनारायणन ने किया, जिन्होंने अपने बहुमूल्य विचार और दृष्टिकोण साझा किए। उनके शब्द बेहद प्रेरणादायक थे और दर्शकों के लिए एक खास अनुभव प्रदान किया।

प्रभारी सचिव डॉ. बिनोई के कुर्यन, डॉ. जेसी एम डी, प्रभारी निदेशक (अनुसंधान) और डॉ. सिजु टी, रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह में आशीर्वचन दिए। उन्होंने अपने आशीर्वचन के दौरान हिंदी अनुभाग की गतिविधियों की सराहना की और भविष्य के लिए सारी शुभकामनाएं दीं।

हिंदी पखवाड़ा समारोह के समापन समारोह के रूप में रबड़ बोर्ड में राजभाषा सम्मेलन आयोजित करते हैं। रबड़ बोर्ड के मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के पदधारियों के लिए सितंबर 2023 के दौरान हिंदी पखवाड़ा समारोह के सिलसिले में विभिन्न प्रतियोगिताएं चलाई थीं। पखवाड़ा समारोह के सिलसिले में चलाई गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं के पुरस्कारों का वितरण राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर किया गया।

श्री जी सुनीलकुमार, सहायक निदेशक (रा भा) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

रबड़ बोर्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

केंद्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार, रबड़ बोर्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन 28 अक्टूबर से 3 नवंबर 2024 तक सभी कार्यालयों में किया गया। सप्ताह की शुरुआत 28.10.2024 को पूर्वाह्न 11 बजे सभी कर्मचारियों द्वारा सत्यनिष्ठा शपथ लेने के साथ हुई। इस वर्ष के थीम 'राष्ट्र की समृद्धि के लिए अखंडता की संस्कृति' पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए।

प्रतियोगिताओं के तहत, 30.09.2024 को हायर सेकेंडरी स्कूलों के छात्रों के लिए भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 12 छात्र भाग लिए। इसके बाद 03.10.2024 को कॉलेज छात्रों के लिए भाषण प्रतियोगिता हुई, जिसमें 14 छात्रों ने प्रतिभागिता की। रबड़ बोर्ड के कर्मचारियों के लिए भी इसी विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 10 कर्मचारी प्रतिभागी रहे। इसके अलावा, बोर्ड के मुख्यालय, गुवाहाटी और अगर्तला कार्यालयों के पदधारियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गईं, जिनमें क्रमशः 26, 64 और 34 कर्मचारियों ने प्रतिभागिता कीं।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह - समापन सम्मेलन

05.11.2024 को भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान, कोट्टयम में समापन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें श्री ए. एस. राजीव, माननीय सतर्कता आयुक्त, केंद्रीय सतर्कता आयोग ने मुख्य अभिभाषण दिया। उन्होने कहा कि ईमानदारी के साथ निर्णय लेने और जिम्मेदारी की भावना की नींव डालने के लिए ऐसी संस्कृति को बचपन से ही विकसित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि एक प्रभावी रक्षा सतर्कता प्रणाली लागू हो तो दंड देने वाली सतर्कता प्रणाली की आवश्यकता कम होगी। श्री वसंतगेशन आई आर एस, कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि सतर्कता सप्ताह मनाना इस विषय

में जागरूकता बढाने के लिए मदद होगा।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के सिलसिले में कोट्टयम जिले के हायर सेकंडरी स्कूल, कॉलेज के छात्रों और बोर्ड के पदधारियों के लिए आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को समापन समारोह के दौरान पुरस्कार वितरित किए। कोट्टयम सी एम एस कॉलेज के छात्रों द्वारा प्रस्तुत फ्लैश मोब भी कार्यक्रम का हिस्सा था।

श्रीमती पी श्रीविद्या, सहायक सतर्कता अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

मुख्यालय में हिंदी कार्यशाला

रबड़ बोर्ड मुख्यालय में 30 दिसंबर 2024 को एक अर्ध दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन हाइब्रिड मोड पर किया गया। इस कार्यशाला में 100 से अधिक पदधारी उपस्थित रहे, जिनमें रबड़ बोर्ड मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के पदधारी शामिल थे। इसके अतिरिक्त, 15 अधीनस्थ कार्यालयों के पदधारी ऑनलाइन जुड़े। सत्र का संचालन श्री जी. सुनील कुमार, सहायक निदेशक (रा भा) ने किया, जिन्होंने कार्यशाला में हिंदी के आधिकारिक उपयोग और इसके लिए उपलब्ध ई-उपकरणों पर विशेष रूप से चर्चा की।

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य हिंदी का प्रयोग दैनिक कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक करने के लिए पदधारियों को सक्षम बनाना था। इसमें यह दिखाया गया कि कैसे विभिन्न ई-उपकरणों का उपयोग करके हिंदी के प्रभावी रूप से प्रयोग किया जा सकता है। कार्यशाला की शुरुआत में हिंदी में आधिकारिक उपयोग के लिए विभिन्न ई-उपकरणों का परिचय दिया गया। श्री सुनील कुमार ने यह दिखाया कि कैसे इन उपकरणों का उपयोग करके हिंदी में दस्तावेज़ टाइप और प्रोसेस किया जा सकता है, जिससे कार्य में दक्षता और सटीकता सुनिश्चित होती है। उन्होंने प्रतिभागियों को लोकप्रिय हिंदी टाइपिंग सॉफ़्टवेयर और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करने का तरीका दिखाया।

कार्यशाला को व्यावहारिक और आकर्षक बनाने के लिए एक इंटरएक्टिव सत्र आयोजित किया। कार्यशाला का हाइब्रिड रूप, जिसमें भौतिक और ऑनलाइन दोनों प्रकार की भागीदारी थी, विभिन्न स्थानों पर स्थित पदधारियों को भाग लेने का अवसर दिया। 15 अधीनस्थ कार्यालयों के पदधारियों ने, जो ऑनलाइन जुड़े थे,

प्रशिक्षक से संवाद किया और सीखा कि वे अपनी संबंधित कार्यालयों में हिंदी के उपयोग को कैसे बेहतर बना सकते हैं।

ई-ऑफिस में हिंदी का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिसमें पदधारियों को यह सिखाया गया कि ई-ऑफिस प्लेटफ़ॉर्म पर हिंदी में दस्तावेज़ कैसे तैयार करें और कार्य करें। साथ ही यह भी दिखाया गया कि ई-ऑफिस में सामग्री को हिंदी में अनुवादित करना बहुत ही आसान है।

कार्यशाला ने न केवल प्रतिभागियों के हिंदी में ज्ञान बढ़ाया, बल्कि उन्हें आधिकारिक उद्देश्यों के लिए हिंदी का उपयोग करने में भी आत्मविश्वास दिया। कार्यशाला के दौरान पेश किए गए ई-उपकरणों के समर्थन से, अधिकारी अब अपने दैनिक पत्राचार और टिप्पणी लेखन में हिंदी का उपयोग करने में अधिक सक्षम हैं।

अधीनस्थ कार्यालयों में एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला

रबड़ बोर्ड के अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी कार्यशालाओं और राजभाषा निरीक्षण का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य पदधारियों की हिंदी दक्षता बढ़ाना, उन्हें राजभाषा अधिनियम एवं नियमों से परिचित कराना तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकतम उपयोग हेतु मार्गदर्शन प्रदान करना था। जुलाई से अगस्त 2024 के दौरान बोर्ड के प्रादेशिक कार्यालय चंगनाश्शेरी, कांजिरप्पल्ली, पाला, मूवाट्टुपुषा, तृश्शूर, पत्तनंतिट्टा, अडूर, कोट्टारक्करा, मार्ताडम, तिरुवनंतपुरम और केंद्रीय परीक्षण स्टेशन चेत्तक्कल में एकदिवसीय हिंदी कार्यशालाएं

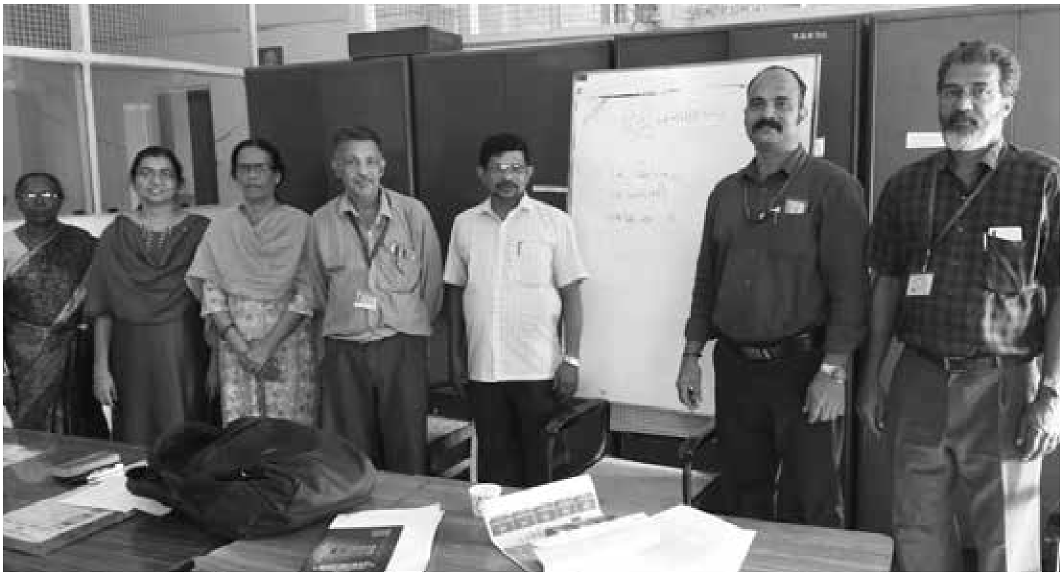

आयोजित की गईं। श्री जी सुनीलकुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा) और श्रीमती श्रीविद्या एम, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने कक्षाएँ संभालीं। सत्रों में राजभाषा अधिनियम, सरकारी नीतियाँ, कार्यालयीन पत्राचार में हिंदी का प्रयोग, अनुवाद तकनीक तथा हिंदी में मसौदा तैयार करने के व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा की गई। प्रतिभागियों को अनुवाद अभ्यास व तिमाही रिपोर्ट तैयार करने का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही, संबंधित कार्यालयों में राजभाषा निरीक्षण कर हिंदी कार्यान्वयन की स्थिति का आकलन किया गया और सुधार हेतु सुझाव दिए गए। सभी पदधारियों ने कार्यशाला में उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

पूर्व और पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए
संयुक्त राजभाषा सम्मेलन

05 मार्च 2025 को गुवाहाटी में आयोजित पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में रबड़ बोर्ड प्रादेशिक कार्यालय नगांव से निम्नलिखित अधिकारी उपस्थित रहे।

1) मंजुला आर, अनुभाग अधिकारी

2) ऋषिकेश बोरा, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1

3) आदित्या सोमशेखरन पिल्लै, कनिष्ठ सहायक

गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित इस सम्मेलन का उद्देश्य पूर्वी एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र में राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन को बढ़ावा देना था। इस अवसर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार, सरकारी कार्यों में हिंदी के प्रयोग एवं राजभाषा नियमों के अनुपालन पर विस्तृत चर्चा की गई।

उद्‌घाटन सत्र में वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला गया। राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु विभिन्न तकनीकों एवं उपायों पर सत्र आयोजित किए गए। पुरस्कार वितरण समारोह में उत्कृष्ट रूप से हिंदी के कार्यान्वयन किए संस्थानों को सम्मानित किया गया।

चर्चा के दौरान प्रतिभागियों ने अपने अनुभव एवं समस्याओं को साझा किया तथा उनके समाधान सुझाए गए। इस सम्मेलन में रबड़ बोर्ड प्रादेशिक कार्यालय नगांव के पदधारियों की भागीदारी से हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं कार्यालयी कार्यों में सुधार लाने हेतु महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई।

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

नराकास की 48 वीं बैठक

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 48वीं बैठक 23 अगस्त 2024 को अपराह्न 2.00 बजे रबड़ बोर्ड मुख्यालय में संपन्न हुई। श्री एम वसंतगेशन, आई आर एस, अध्यक्ष नराकास एवं कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में श्री अनिरबान कुमार बिश्वास, उप निदेशक (कार्यान्वयन) ने राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व किया। श्री जी सुनीलकुमार, सदस्य सचिव ने अध्यक्ष, उप निदेशक (कार्या.), उपस्थित कार्यालयों के प्रमुखों/अधिकारियों का स्वागत किया।

स्वागत भाषण के बाद बैठक में उपस्थित सदस्यों/अधिकारियों ने अपना परिचय दिया। तदुपरांत श्री एम वसंतगेशन, आई आर एस ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि कोट्टयम नगर के सभी बैंक, सार्वजनिक उपक्रम और केंद्र सरकार कार्यालय एकसाथ मिलकर राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियों में लगना बहुत सराहनीय कार्य है। इससे राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से प्रत्येक कार्यालय में किये जाने वाले कार्यों से अन्य कार्यालय अवगत हो जाते हैं तथा अनुकरणीय कार्य अपनाने का अवसर भी प्राप्त होता है। जिससे समिति के सभी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन में अच्छी प्रगति हासिल की जा सकती है। उन्होंने बताया कि हमें आगे भी राजभाषा के उन्नयन के लिए मिलकर कार्य करना है। अध्यक्षीय भाषण के बाद कार्यसूची के अन्य विषयों पर चर्चा हुई।

श्री अनिरबान बिश्वास ने कार्यालय में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री बिश्वास ने, कमियों को उजागर करने के बजाय, यह समझाया कि इन कमियों से कैसे बचा जा सकता है। इसके साथ ही उन्होंने कंठस्थ 2.0 के उपयोग के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कंठस्थ 2.0 के उपयोग करने से अधिकारी और कर्मचारी स्वयं हिंदी में कार्य कर सकेंगे, जिससे हिंदी अनुभाग या हिंदी कर्मचारियों से मदद लेने की आवश्यकता नहीं रहेगी। उन्होंने सदस्य कार्यालयों की अर्धवार्षिक प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा की और उन कार्यालयों में जहाँ प्रदर्शन बहुत कम है, वहाँ की कमियों को दूर करने के लिए सुझाव दिए।

सदस्य सचिव ने 47 वीं बैठक के निर्णयों पर की गई कार्रवाई की रिपोर्ट पेश

की। सदस्य सचिव ने समिति को कोट्टयम नराकास की पत्रिका अक्षरनगरीया के प्रकाशन में हो रही व्याावहारिक कठिनाई के बारे में अवगत कराया। उपलब्ध लेखों की कम संख्या इसका प्रमुख कारण है। हमें अब तक केवल 10-15 लेख ही प्राप्त हुए हैं।

समारोह के दौरान हिंदी के सराहनीय कार्यान्वयन के लिए सदस्य कार्यालयों को राजभाषा ट्रॉफियाँ प्रदान की गईं। हिंदी कर्मचारी वाले और बिना हिंदी कर्मचारी वाले कार्यालयों को अलग से पुरस्कार वितरित किए गए।

श्री एम पी श्रीकुमार, हिंदी अनुवादक, भारत संचार निगम लिमिटेड ने कृतज्ञता ज्ञापित की। अपराह्न 4.00 बजे बैठक समाप्त हुई।

नराकास की 49 वीं बैठक

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 49 वीं बैठक 28 जनवरी 2025 को रबड़ बोर्ड मुख्यालय में संपन्न हुई। एम वसंतगेशन आई आर एस, अध्यक्ष नराकास

एवं कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड, कोट्टयम ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, कोची के उप निदेशक (कार्या) श्री निर्मल कुमार दुबे ऑनलाइन उपस्थित थे।

बैठक का शुभारंभ मौन प्रार्थना से किया गया। जी सुनील कुमार, सदस्य सचिव ने अध्यक्ष, उप निदेशक (कार्या) एवं उपस्थित सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों/पदधारियों का स्वागत किया। श्री एम वसंतगेशन, अध्यक्ष ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों जैसी समितियाँ राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में सुधार लाने के लिए एकजुट बैठकर चिंतन मनन करने का मंच है। समिति का कार्य दूसरे कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन में प्रेरणा देने में सहायक निकलता है। उन्होंने बैठक में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के उप निदेशक एवं राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि श्री निर्मल कुमार दुबे का विशेष रूप से स्वागत किया। उन्होंने जोडा कि बैठक में राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि की उपस्थिति हमेशा ही बैठक को जीवंत बनाती है।

श्री निर्मल कुमार दुबे, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय ने राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व करते हुए सदस्य कार्यालयों से प्राप्त अर्धवार्षिक प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा की। उन्होंने राजभाषा नियमों/अधिनियमों के पालन की आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इसका गंभीरता से अनुपालन करने के अनुदेश दिए। उन्होंने प्रत्येक कार्यालय की रिपोर्ट की सावधानीपूर्वक समीक्षा की एवं रिपोर्ट में उल्लिखित कमियों को दूर करने के लिए दिशा-निर्देश दिए। कुल 34 कार्यालयों में से 20 कार्यालयों से अर्धवार्षिक प्रगति रिपोर्टें प्राप्त हुई थी। उप निदेशक (कार्यान्वयन) ने बताया कि सभी सदस्य कार्यालयों से अर्धवार्षिक रिपोर्टें प्राप्त करने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अनुपालन में भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक बैठक में एक-एक कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियों में विशेष उपलब्धियों की जानकारी सभी सदस्य कार्यालयों को देने के उद्देश्य से प्रस्तुति देने के बारे में बताया तथा अगली बैठक में रबड़ बोर्ड द्वारा प्रस्तुति दी जाएगी।

श्री एम पी श्रीकुमार, हिंदी अनुवादक, भारत संचार निगम लिमिटेड ने कृतज्ञता ज्ञापित कीं।

कोट्टयम नराकास, राजभाषा ट्रॉफियों का वितरण

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 48वीं बैठक 23 अगस्त 2024 को आयोजित की गई, जिसमें राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सदस्य कार्यालयों को राजभाषा ट्रॉफियों का वितरण किया गया। श्री एम वसंतगेशन आई आर एस ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोची ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। हिंदी कर्मचारी वाले कार्यालयों में, दो कार्यालयों को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ, जो निम्नानुसार हैं -

प्रथम - ***भारत संचार निगम लिमिटेड,***
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

द्वितीय - ***राष्ट्रीय होम्योपैथी मानसिक स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान***

बिना हिंदी स्टाफ वाले कार्यालयों में, पुरस्कार प्राप्त कार्यालयों की सूची निम्नानुसार हैं -

प्रथम - ***भारतीय स्टेट बैंक,***
केनरा बैंक

द्वितीय - ***भारतीय खाद्य निगम,***
कर्मचारी भविष्य निधि संगठन

उप निदेशक कार्यान्वयन ने इन कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग पर संतुष्टि जताई। बैठक के दौरान, यह भी चर्चा हुई कि हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए और अधिक प्रयास किए जाने चाहिए ताकि कार्यालयों में राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित हो सके। पुरस्कार प्राप्त करने वाले कार्यालयों की सराहना करते हुए, उन्हें भविष्य में भी इस दिशा में निरंतर प्रयास करने के लिए प्रेरित किया गया। उन्होंने बताया कि ऐसे कार्यक्रम सदस्यों के बीच उत्साह और समर्पण को बढ़ावा देता है और राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए उनकी प्रतिबद्धता को सुदृढ कर देता है।

संयुक्त हिंदी सप्ताह/ संयुक्त हिंदी कार्यशाला

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में 15.01.2025, 17.01.2025 और 21.01.2025 को रबड़ बोर्ड, मुख्यालय में नराकास के सदस्य कार्यालयों के पदधारियों के लिए विविध प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। बोर्ड के मुख्यालय और भारतीय रबड़ अनुसंधान पदधारी सहित लगभग 90 प्रतिभागी इसमें भाग लिए। पदधारियों के लिए कुल 10 प्रतियोगिताएं (टिप्पण एवं आलेखन, निबंध लेखन, कवितापाठ, हिंदी गीत, भाषण, स्मरण शक्ति परीक्षा, प्रश्नोत्तरी, देशभक्ति गीत, हिंदी टंकण और समाचार वाचन) आयोजित कीं। इसके अलावा पदधारियों के बच्चों के लिए 18 जनवरी 2025 को चार वर्गों में बांटकर विविध प्रतियोगिताएं आयोजित कीं।

इसके अलावा कोट्टयम नराकास के तत्वावधान में कोट्टयम स्थित केंद्र सरकार कार्यालयों/संगठनों के पदधारियों के लिए 20 जनवरी 2025 को पूर्वाह्न 10.00 बजे से अपराह्न 1.00 बजे तक एक संयुक्त हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इसमें बोर्ड के मुख्यालय और भारतीय रबड अनुसंधान संस्थान के कुल 10 पदधारी एवं अन्य सदस्य कार्यालयों से पदधारी भाग लिए।

जी सुनीलकुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा), रबड़ बोर्ड एवं सदस्य सचिव, कोट्टयम नराकास ने कक्षा संभाली। उन्होंने संघ की राजभाषा नीति पर राजभाषा हिंदी के उपयोग में मददगार विविध नई तकनीकों के बारे में भी विस्तृत रूप से बताया।

संयुक्त हिंदी सप्ताह - समापन समारोह 2023-24

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में आयोजित संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह 2023-24 का समापन सम्मेलन 13 जून 2024 को रबड़ बोर्ड मुख्यालय में आयोजित किया। श्रीमती सेलिन वर्गीस, मुख्य प्रबंधक (सेवानिवृत्त), भारतीय स्टेट बैंक मुख्यातिथि रही। उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए कोट्ट यम नराकास के प्रयासों की सराहना की और संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह के सिलसिले में आयोजित विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी। एम वसंतगेशन आई आर एस, अध्यक्ष, कोट्टयम नराकास एवं कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने समारोह की अध्यक्षता की। सम्मेलन में संयुक्त हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों और विजेता बच्चों को पुरस्कारों से सम्मानित किया। समारोह में श्री रामचंद्रन, उप महाप्रबंधक, भारत संचार निगम लिमिटेड, और श्री श्रीजित, क्षेत्रीय आयुक्त, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन ने आशिर्वचन दिया।

श्रीमती पडच्चिरा रीलु चेरिजी, लेखा अधिकारी, रबड़ बोर्ड के प्रार्थना गीत से सम्मेलन का शुभारंभ हुआ तथा श्री जी सुनीलकुमार, सदस्य सचिव ने अतिथियों को स्वागत किया। श्री एम पी श्रीकुमार, हिंदी अनुवादक, भारत संचार निगम लिमिटेड ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

संयुक्त हिंदी सप्ताह - समापन समारोह 2024-25

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में आयोजित संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह 2024-25 का समापन सम्मेलन 25 मार्च 2025 को राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के सभागार में आयोजित किया गया। इस समारोह में डॉ. रमादेवी, वरिष्ठ व्याख्याता (सेवानिवृत्त), सी.एम.एस. कॉलेज, कोट्टयम मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं।

डॉ. रमादेवी ने हिंदी भाषा की महत्ता पर प्रकाश डाला और सूरदास तथा अन्य कवियों की रचनाओं के माध्यम से हिंदी के महत्व को बताया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि भारत में हिंदी भाषा का ज्ञान बहुत आवश्यक है, क्योंकि हिंदी जाने बिना देश के विभिन्न हिस्सों में यात्रा करना कभी-कभी मुश्किल हो सकता है।

समापन समारोह की अध्यक्षता श्री एम. वसंतगेशन, आई आऱ एस, अध्यक्ष, कोट्टयम नराकास एवं कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने की। इस दौरान संयुक्त हिंदी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं, कर्मचारियों और बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

साथ ही, जिन कार्यालयों ने संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह में सक्रिय रूप से भाग लिया और जिन कार्यालयों ने सबसे अधिक अंक प्राप्त किए, उन्हें भी विशेष पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। समारोह में श्री पी. अरुमुगम, प्रभारी निदेशक (प्रशिक्षण), ने आशीर्वचन दिया।

सम्मेलन का शुभारंभ कुमारी अन्ना मरिया जॉर्ज, प्रशिक्षणार्थी, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के प्रार्थना गीत से हुआ। श्री जी. सुनीलकुमार, सदस्य सचिव ने अतिथियों का स्वागत किया। श्री एम. पी. श्रीकुमार, हिंदी अनुवादक, भारत संचार निगम लिमिटेड ने आभार व्यक्त किया।

समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, बच्चों के माता-पिता, केंद्रीय विद्यालय और जवाहर नवोदय विद्यालय के शिक्षक का इस आयोजन को सफल बनाने में अहम योगदान रहा।

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, नई दिल्ली हिंदी को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक गैर सरकारी संगठन है, जो अखिल भारतीय स्तर पर केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। वर्ष 2024-25 के दौरान भी संगठन ने कर्मचारियों के लिए निबंध लेखन, टिप्पण एवं आलेखन, टंकण सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया था। इन प्रतियोगिताओं में कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का प्रतिनिधित्व करते हुए पदधारियों ने भाग लिया। हिंदीतर भाषी क्षेत्र के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिताओं के प्रथम और द्वितीय पुरस्कार कोट्टयम नराकास के प्रतिनिधित्व करने वाले कर्मचारियों द्वारा प्राप्त किए गए। टिप्पण और आलेखन प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार भी कोट्टयम नराकास के अधीन पदधारी को प्राप्त हुआ। इसके अलावा हिंदी टंकण प्रतियोगिता

में राज्य प्रथम पुरस्कार कोट्टयम नराकास को प्राप्त हुआ।

पुरस्कार विजेताओं की सूची

निबंध लेखन प्रतियोगिता

प्रथम - श्रीमती आर पुष्पकुमारी, लेखा अधिकारी, रबड़ बोर्ड मुख्यालय

द्वितीय - श्रीमती सी ई जयश्री, प्रयोगशाला सहायक, केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला, रबड़ बोर्ड

तृतीय - श्रीमती रश्मी कण्णन, भारतीय जीवन बीमा निगम

निबंध लेखन (भाषा वर्ग - मलयालम)

प्रथम - श्रीमती एस एस बिंदु, सहायक, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान, रबड़ बोर्ड

टिप्पण एवं आलेखन

तृतीय - श्रीमती आर पुष्पकुमारी, लेखा अधिकारी, रबड़ बोर्ड मुख्यालय

हिंदी टंकण

राज्य प्रथम - श्री नसीफ ए यू, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1, रबड़ बोर्ड मुख्यालय

केंद्रीय जल आयोग एवं केंद्रीय सचिवालय परिषद के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 21 मार्च 2025 को सायं 5.15 बजे, नई पुस्तकालय भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली में आयोजित राजभाषा संगोष्ठी एवं अखिल भारतीय वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. सुमेर सिंह सोलंकी, सांसद एवं संसदीय राजभाषा समिति के सदस्य थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. मुकेष कुमार सिन्हा, अध्यक्ष, केंद्रीय जल आयोग एवं पदेन सचिव, भारत सरकार उपस्थित रहे। समारोह की अध्यक्षता श्री अभिनव कुमार, रेलवे बोर्ड के पूर्व कार्यकारी निदेशक ने की।

इस अवसर पर श्री बंसुरीलाल मीणा, परिषद उपाध्यक्ष, श्री एन. सुभाष चंद्र, परिषद कार्यकारी सदस्य एवं श्री राजेश कुमार गुप्ता, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग के कार्यपालक अभियंता ने भी सभा को संबोधित किया।

कार्यक्रम में पूर्व परिषद उपाध्यक्ष श्री भगवान दास वर्मा को परामर्शदाता के रूप में सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में हिंदी प्रेमी, अधिकारीगण एवं आमंत्रित अतिथि उपस्थित थे। समारोह का समापन हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए किया गया।

हिंदी के मोती - मुहावरे

आसमान के तारे तोडना - बहुत कठिन काम करना

वह पढ़ाई में इतना अच्छा है जैसे उसने आसमान के तारे तोड़ लिए हैं।

आँखों का तारा - बहुत प्यारा या प्रिय व्यक्ति

वह अपने माता-पिता की आँखों का तारा है।

पेट में चूहे कूदना - बहुत तेज भूख लगना

सुबह से कुछ नहीं खाया, अब तो पेट में चूहे कूद रहे हैं।

सिर पर चढ़कर बोलना - बहुत ज्यादा हावी हो जाना

अगर बच्चों को ज्यादा छूट दो, तो वे सिर पर चढ़कर बोलने लगते हैं।

सेवानिवृत्तियां 2024

मई

डॉ. मेर्सी एम ए
वैज्ञानिक डी

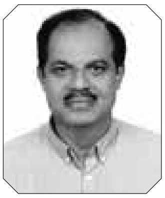
डॉ. सिबी वर्गीस
संयुक्त निदेशक

विश्वनाथ प्रभु पी आर
उप निदेशक

लिस्सी एम जे
उप निदेशक

सुनिलकुमार पी जी
विकास अधिकारी

नूरजिहान पी के
विकास अधिकारी

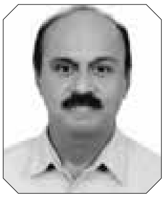
सकीर वी ए
विकास अधिकारी

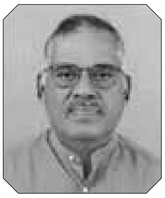
जोण वी ज़क्करिया
विकास अधिकारी

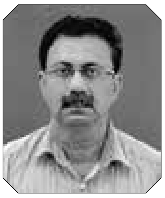
जस्टिन सी एम
विकास अधिकारी

षाजु वी पॉल
विकास अधिकारी

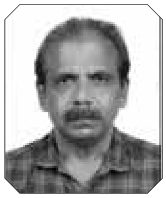
आर जयचंद्रन
सहायक निदेशक वित्त

डॉ. बाल कृषन
वैज्ञानिक सी

एम पी शांतम्मा
अनुभाग अधिकारी

रजनी पी
अनुभाग अधिकारी

पद्मजा के
अनुभाग अधिकारी

मल्लिका अम्मा एस
अनुभाग अधिकारी

पी के पोन्नम्मा
अनुभाग अधिकारी

सुमंगला वी सी
अनुभाग अधिकारी

जयपार्वती अम्माल जे
अनुभाग अधिकारी

ज्योति एस
अनुभाग अधिकारी

रेजिमोल सेवियर
अनुभाग अधिकारी

ललिता एम जी
अनुभाग अधिकारी

शाहनवास
अनुभाग अधिकारी

गिरिजा पी आर
अनुभाग अधिकारी

आर सुधालक्ष्मी
अनुभाग अधिकारी

गिरिजा सी एस
अनुभाग अधिकारी

सबीना पी
अनुभाग अधिकारी

मालिनी कुंजम्मा एम एस
सहायक सांख्यिकीविद्

षेर्ली जोसफ
सहायक विकास अधिकारी

के प्रभावती
सहायक विकास अधिकारी

सेवानिवृत्तियां 2024

मई

सिन्सा के एम
सहायक विकास अधिकारी

गोपालकृष्णन के
सहायक विकास अधिकारी

डॉ. रीताम्मा जोसफ
सहायक रबड़ प्रौद्योगिकीविद्

के नारायणन नंबूतिरि
फोरमैन

पत्रोस एम एम
सहायक

प्रसन्नकुमारी के आर
सहायक

बालकृष्णन पी के
कनिष्ठ प्रक्षेत्र अधिकारी

वर्गीस मात्यु
सर्वेक्षण निरीक्षक

रबि देब बर्मा
वरिष्ठ फील्डमैन

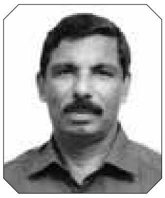

टोमी सी जोसफ
वरिष्ठ रबड़ टापिंग निदर्शक

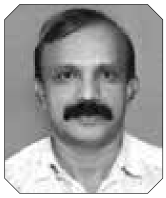

टी सी कृष्णनकुट्टी
अभिलेखपाल/ प्रयोगशाला परिचर

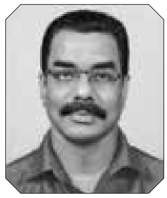

जेयिन वी आर
अभिलेखपाल / प्रयोगशाला परिचर

मई

कुंजुरामन पी आर
स्टाफ कार चालक ग्रेड II

जेइम्स जेकब
शिफ्ट पर्यवेक्षक

जून

डॉ.कुमारी जयश्री पी
वैज्ञानिक डी

पूवप्पा नायिक के
अनुभाग अधिकारी

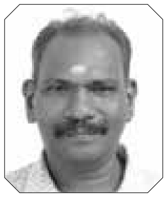

सी बी बाबु
अभिलेखपाल/प्रयोगशाला परिचर

जुलाई

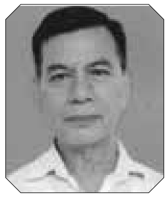

प्रबिन राभा
सहायक सचिव

अगस्त

गोपी रंजन दास गोस्वामी
विकास अधिकारी

सुधाकर बापुजी तिरपुडे
विकास अधिकारी

सितंबर

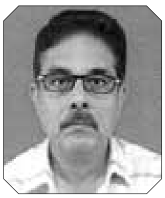

देबज्योती चक्रबर्ती
विकास अधिकारी

लालसी कुरुविला
स.विकास अधिकारी

मिनी रविचंद्रन
सहायक (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)

अक्तूबर

अजित प्रसाद वी
विकास अधिकारी

अक्तूबर

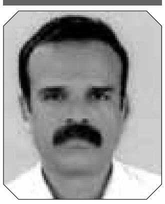

सजीवन के डी
स्टाफ कार चालक

नवंबर

राधामणी मुरिक्कोली
उप रबड़ उत्पादन आयुक्त

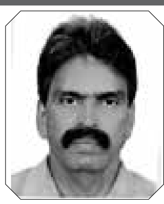

सुब्रह्मण्या टी
अनुभाग अधिकारी

प्रदीप चंद्रा भुयान
सुरक्षा गार्ड

दिसंबर

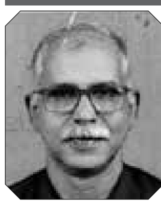

सी मात्यु जोसफ
उप रबड़ उत्पादन आयुक्त

वर्गीस चेरियान
उप रबड़ उत्पादन आयुक्त

सेवानिवृत्तियां 2024

दिसंबर

ए सुशीला
अनुभाग अधिकारी

अनिम्मा चेरियान
अनुभाग अधिकारी

के जे जोसफ
स.विकास अधिकारी

जयकुमार ए आर
सहायक

शंकर भौमिक
व. अभिलेखपाल

प्रशांत कुमार भांजा
स्टाफ कार चालक ग्रेड 1

सेवानिवृत्तियां 2025

जनवरी

अरुणाभा मजुमदार
विकास अधिकारी

प्रसाद पी
सहायक निदेशक (प्रचार)

सोली जे ओस्टिन
अनुभाग अधिकारी

साम जोणसन
अनुभाग अधिकारी

सुकल्याण दत्ता गुप्ता
सहायक विकास अधिकारी

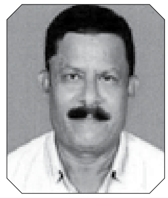
पी मूसा
स्टाफ कार चालक, ग्रेड 1

जनवरी

अनिता पी
अनुभाग अधिकारी

फरवरी

बाबुराज ई जी
बा आ अधिकारी

श्रीनारायणन पी
प्रक्षेत्र अधिकारी

मार्च

जोण तोमस एम
उप निदेशक (साँख्यिकी)

उमादेवी सी एन
विकास अधिकारी

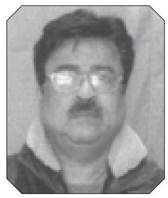
बिश्वजित चक्रबर्ती
विकास अधिकारी

मार्च

डॉ. मीना सिंह
वैज्ञानिक सी

जयरामन सी एन
अनुभाग अधिकारी

मिनी जे पल्लिपरंबिल
सहायक वैज्ञानिक अधिकारी

जोर्डी सी जे
सहायक

एम इसहाक
वरिष्ठ रबड़ टापिंग निदर्शक

आइसक एस
उप सचिव
(स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)

शुभकामनाएं

रसोई घर

रागी इडली

सामग्री -

$^1/_2$ कप चावल का आटा

1 कप रागी का आटा

$^1/_4$ कप उड़द दाल

स्वादानुसार नमक

$^1/_2$ चम्मच बेकिंग सोडा

बनाने की विधि

1. सबसे पहले उड़द दाल आटा, रागी आटा और चावल के आटा को एक बर्तन में डालकर अच्छी तरह मिक्स करें पानी डालकर अच्छी तरह 30 मिनट के लिए ढककर रख दें अब बेकिंग सोडा डालकर अच्छी तरह मिक्स कर लें।
2. अब एक इडली स्टैंड को गर्म करें उसमें तेल लगाकर चिकना कर लें चम्मच से इडली के घोल को सांचों में डालकर 10 मिनट के लिए स्टीम कर लें।
3. तैयार इडली को 5 मिनट ठंडा करने और चम्मच की मदद से इडली को निकालकर बर्तन में अलग रख लें। इडली को नारियल चटनी हरी चटनी टमाटर सॉस या सांबार के साथ गरमागरम परोसें।

मोटिवेशनल या प्रेरक कहानी

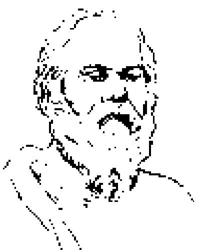

एक बार एक व्यक्ति ने महान सुकरात से पूछा कि सफलता का रहस्य क्या है?

सुकरात ने उस इंसान को कहा कि वह कल सुबह नदी के पास मिले, वही पर उसे अपने प्रश्न का जवाब मिलेगा। जब दूसरे दिन सुबह वह व्यक्ति नदी के पास मिला तो सुकरात ने उसको नदी में उतरकर, नदी की गहराई मापने के लिए कहा। वह व्यक्ति नदी में उतरकर आगे की तरफ जाने लगा जैसे ही पानी उस व्यक्ति के नाक तक पहुंचा, पीछे से सुकरात ने आकर अचानक से उसका मुंह पानी में डुबो दिया। वह व्यक्ति बाहर निकलने के लिए झटपटाने लगा, कोशिश करने लगा लेकिन सुकरात थोड़े ज्यादा ताकतवार थे। सुकरात ने उसे काफी देर तक पानी में डुबोए रखा।

कुछ समय बाद सुकरात ने उसे छोड़ दिया और उस व्यक्ति ने जल्दी से अपना मुंह पानी से बाहर निकालकर जल्दी जल्दी साँस ली। सुकरात ने उस व्यक्ति से पूछा जब तुम पानी में थे तो तुम क्या चाहते थे? व्यक्ति ने कहा जल्दी से बाहर निकलकर सांस लेना चाहता था। सुकरात ने कहा यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है। जब तुम सफलता को उतनी ही तीव्र इच्छा से चाहोगे जितनी तीव्र इच्छा से तुम सांस लेना चाहते है, तो तुम्हें सफलता निश्चित रूप से मिल जाएगी।

हिंदी दिवस समारोह

प्रादेशिक कार्यालय तिरुवनंतपुरम में 3 अक्तूबर 2024 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री षोजो लोबो, वरिष्ठ प्रबंधक, केनरा बैंक, तिरुवनंतपुरम प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री निर्मल कुमार, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री वी के श्रीकुमार, प्रभारी विकास अधिकारी स्वागत भाषण किया। श्रीमती जानेट रिचार्ड, अनुभाग अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

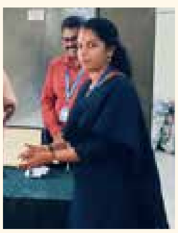

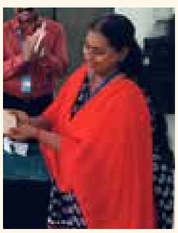

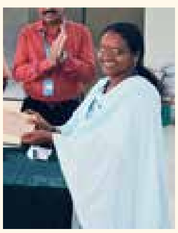

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - सुजा एस, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - जानेट रिचार्ड, अनुभाग अधिकारी

तृतीय - एस नागलता, सहायक

II. भाषण

प्रथम - दीपा सुकुमार, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - सुरेषकुमार वी, स्टाफ कार चालक

तृतीय - अरुणा जोर्ज, सहा. विकास अधिकारी

III. कवितापाठ

प्रथम - दीपा सुकुमार, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - सुरेषकुमार वी, स्टाफ कार चालक

तृतीय - राहुल आर, बैरा

प्रादेशिक कार्यालय मूवाट्टुपुषा में 10 अक्तूबर 2024 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती मिनी जीमोन, शिक्षक, ब्राइट स्कूल, मूवाट्टुपुषा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती सालिमोल ईप्पन, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

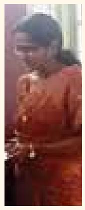

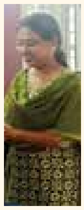

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - रतीदेवी सी जी, क. सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - शोभना आर, सहायक विकास अधिकारी

तृतीय - मिनिमोल एम एस, प्रभारी विकास अधिकारी

II. भाषण

प्रथम - ब्लेसी जोस, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - शोभना आर, सहायक विकास अधिकारी

तृतीय - मिनिमोल एम एस, प्रभारी विकास अधिकारी

III. कवितापाठ

प्रथम - शोभना आर, सहायक विकास अधिकारी

द्वितीय - मिनिमोल एम एस, प्रभारी विकास अधिकारी

तृतीय - रतीदेवी सी जी, क. सहायक ग्रेड 1

प्रादेशिक कार्यालय तोडुपुषा में 27 सितंबर 2024 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती मंजु के एम, हिंदी अध्यापिका प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती मेरिकुट्टी बेबी, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री संतोष वी जी, विकास अधिकारी ने स्वागत भाषण दिया। श्रीमती निषा ए पिल्लै, सहायक ने कृतज्ञता ज्ञापित की। उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - निषा ए पिल्लै, सहायक

द्वितीय - टोणी माइकल, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - संतोष वी जी, विकास अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - निषा ए पिल्लै, सहायक

द्वितीय - बिबिन वी बी, क.सहायक

तृतीय - ई पी सजिकुमार, क. प्रक्षेत्र अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय सिलचर में 8 अक्तूबर 2024 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती आषिमा देवी, हिंदी अध्यापिका, सरला बिरला ज्ञानज्योति अकादमी, मेहरपुर, सिलचर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री के टी राजु, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - अजय कुमार सिरोहिया, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - सालिकुट्टी जोसफ, स. विकास अधिकारी

तृतीय - शुभम भुइन, क्षेत्रीय अधिकारी

II. निबंध लेखन

प्रथम - अजय कुमार सिरोहिया, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - षीजा ई, अनुभाग अधिकारी

तृतीय - नरेंद्र कुमार बैरवा, क्षेत्रीय अधिकारी

III. भाषण

प्रथम - षीजा ई, अनुभाग अधिकारी

द्वितीय - सालिकुट्टी जोसफ, स. विकास अधिकारी

तृतीय - देबाशिष नाथ, सहायक

IV. कवितापाठ

प्रथम - षीजा ई, अनुभाग अधिकारी

द्वितीय - अजय कुमार सिरोहिया, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - सालिकुट्टी जोसफ, स. विकास अधिकारी

आंचलिक कार्यालय गुआहाटी में 3 अक्तूबर 2024 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती शर्मिला टाई, सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय, भारत सरकार प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती रश्मी रेखा मजुमदार, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री बापधन डेका, सहायक सचिव ने स्वागत भाषण दिया। उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। श्रीमती नितेष नंदिनी गौतम, सहायक विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। आंचलिक कार्यालय, प्रादेशिक कार्यालय और प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

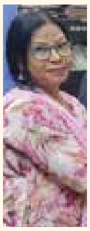

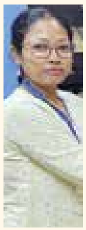

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - वासंती आर, अनुभाग अधिकारी

द्वितीय - प्रीतिस्मिता नायक, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - श्रीलेखा एस, सहायक

II. निबंध लेखन

प्रथम - पिंकी दैमारी, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - षाजिनी आर, क.सहायक ग्रेड 1

तृतीय - शिखा डेका, आशुलिपिक ग्रेड 2

III. भाषण

प्रथम - नितेष नंदिनी गौतम, स.विकास अधिकारी

द्वितीय - रीना टेरन, सहायक

तृतीय - कलिंद्रा डेका, क्षेत्रीय अधिकारी

IV. कवितापाठ

प्रथम - वासंती आर, अनुभाग अधिकारी

द्वितीय - प्रीतिस्मिता नायक, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - पिंकी दैमारी, क्षेत्रीय अधिकारी

V. हिंदी गीत

प्रथम - बीना वी, अनुभाग अधिकारी

द्वितीय - कलिंद्रा डेका, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - कृष्णा दास, विकास अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय बिश्रामगंज में 30 सितंबर 2024 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री अतुल सिन्हा, हिंदी अध्यापक, एच एस स्कूल, बिश्रामगंज प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री गौरंगा दास, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - अपर्णा दत्ता, अनुभाग अधिकारी

द्वितीय - तंद्रा दत्ता, सहायक

तृतीय - पार्था देबनाथ, क्षेत्रीय अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - अपर्णा दत्ता, अनुभाग अधिकारी

द्वितीय - जिबन चंद्र दास, सर्वेक्षण निरीक्षक
तृतीय - स्वपना रोय, क.सहायक ग्रेड 1

III. भाषण

प्रथम - सुकल्याण दत्ता गुप्ता, स.विकास अधिकारी
द्वितीय - अलक मजुमदार, रबड़ टापिंग निदर्शक
तृतीय - खोकन देबनाथ, स्टाफ कार चालक
सुमेष देबबर्मा, क. प्रक्षेत्र अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय सांतिरबज़ार में 30 सितंबर 2024 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती अनिता कुमारी, हिंदी अध्यापिका, केंद्रीय विद्यालय, बगफा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती प्रिया पी बी, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - विपिन, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - राहुल हलदर, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - भवानी चरण गोस्वामी, क.सहायक ग्रेड 1

II. कवितापाठ

प्रथम - बिमल देबबर्मा, क. प्रक्षेत्र अधिकारी
द्वितीय - शंतनु दास, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - अपूर्बा लाल मजुमदार, अनुभाग अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय पालक्काड में 30 सितंबर 2024 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री एन सोमसुंदरन, एच एस एस टी (सेवानिवृत्त), जी एच एस एस बिग बाजार, पालक्काड प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती वी पी प्रेमलता, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। श्रा ए डी टोणी, विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - सेतु के, परिचर
द्वितीय - प्रीता के, सहायक
तृतीय - जयरामन सी एन, अनुभाग अधिकारी
मोहनदास के वी, क.सहायक ग्रेड 1

II. भाषण

प्रथम - प्रीता के, सहायक
द्वितीय - जयरामन सी एन, अनुभाग अधिकारी
तृतीय - मोहनदास के वी, क.सहायक ग्रेड 1

III. कवितापाठ

प्रथम - मोहनदास के वी, क.सहायक ग्रेड 1
द्वितीय - जयरामन सी एन, अनुभाग अधिकारी
तृतीय - प्रीता के, सहायक

अर्थशास्त्र
नोबेल पुरस्कार

जेम्स टोबिन

पुरस्कार वर्ष : 1981
जन्म : 5 मार्च, 1918
मृत्यु : 11 मार्च, 2002
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इस अमरीकी अर्थशास्त्री को समष्टि गत आनुभविक आर्थिक सिद्धांतों के साथ निवेश सूची संबंधी चुनाव के सिद्धांतों के लिए 1981 का नोबेल पुरस्कार दिया गया।

जार्ज जे स्टिगलर

पुरस्कार वर्ष : 1982
जन्म : 17 जनवरी, 1911
मृत्यु : 1 दिसंबर, 1991
राष्ट्रीयता : अमरीकी

अमरीका के इस अर्थशास्त्री को औद्योगिक ढांचों, बाजारों की कार्य प्रणाली तथा सरकारी नियंत्रणों -नियमों के कारण और प्रभावों के संबंध में अध्ययन और विचार के लिए 1982 का नोबेल पुरस्कार दिया गया।

जेराई देब्रो

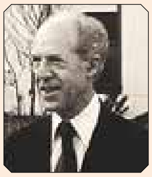

पुरस्कार वर्ष : 1983
जन्म : 4 जुलाई, 1921
मृत्यु : 31 दिसंबर, 2004
राष्ट्रीयता : अमरीकी/फ्रेंच

इन्होंने आर्थिक सिद्धांतों के विश्लेषण के लिए नये तरीके अपनाये तथा सामान्य एकीकरण सिद्धांत की फिर से व्याख्या की-जिसके कारण 1983 में इन्हें नोबेल पुरस्कार दिया गया।

सर रिचर्ड स्टोन

पुरस्कार वर्ष : 1984
जन्म : 30 अगस्त, 1913
मृत्यु : 6 दिसंबर, 1991
राष्ट्रीयता : ब्रिटिश

राष्ट्रीय अकाउण्ट्स व्यवस्था विकसित करने के इनके महान योगदान के लिए इन्हें 1984 का नोबेल पुरस्कार दिया गया। इनके इस कार्य से आर्थिक विश्लेषण का आधार भी विकसित हुआ।

फ्रांको मोडीग्लिआनी

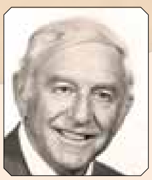

पुरस्कार वर्ष : 1985
जन्म : 18 जून, 1918
मृत्यु : 25 सितंबर, 2003
राष्ट्रीयता : इटालियन/अमरीकी

रोम में पैदा हुए इस अर्थशास्त्री ने जिस सिद्धांत का प्रतिपादन किया उसे लाइफ साइकल सेविंग सिद्धांत कहते हैं। इसके कारण अब सभी अर्थ विशेषज्ञ इसे मितव्ययिता का आधार अथवा कुंजी मानते हैं। यही कारण था इन्हें 1985 का पुरस्कार मिलने का।

Penta Offset, KTM. 0481-2583959